

DPN 6216

Title: विभिन्न बौद्ध पूजा विधि VIBHINNA BAUDDHA PUTA VIDHI

Run. No. 6907

Cat. No.

Micro. No.

Subject कर्मकाण्ड व पूजा विधि
Ritual Religious

Religion: Hindu / Buddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt.-New. / Maith.-New. / New.-Nep. /

नेपालभाषा निर्देश
new direction

Size in cms. 21.5 x 7

Folios 146 Lines (in a page) 6 irregular

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

मानदास सुगतदास

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Mandas Sugatadas

Script: New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus.:

Material: palmleaf / paper / thyasaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water / दृष्टी जा: स्व: कां चिन्ता त: गु /

registered at the Centre of the MS.

Beginning, colophon, post-colophon:

↓
अनमः श्री वज्रसत्त्वाम ॥ नमः गुरु मण्डला, सिद्धा तयके, मण्डल थिक्के, स्वान लने ॥
समाप्ति / colophon इति सिद्ध धाम विधि, धुम ॥ ... इति श्री बौद्ध, एतद् एतद् समाप्त ॥

टिप्पणी : इस मासिकोपग्रन्थका विषय सूची अलग; २-५
Content list of this MS is also included.

Some of titles / ई ईर्ष्यक अर्थ —

1. पूजा विधि
2. दश कर्म किंजाल विधि
3. पदित्या (प्रतीक्षा) कर्म विधि आदि विधि
4. देवता भजना
5. दिवस दिन
6. जात कर्म
7. नाम बाल
8. फल प्राप्ति, अन्न प्राप्ति
9. उपनयन विधि
10. पूजा बाल विधि
11. ई पदित्या

92. सानि काल भावना
93. किंजाल भावना
94. किंजाल नाम भजना
95. होम भजना
96. पौष्टिक आदि भजना

15

10

5

0

CMS

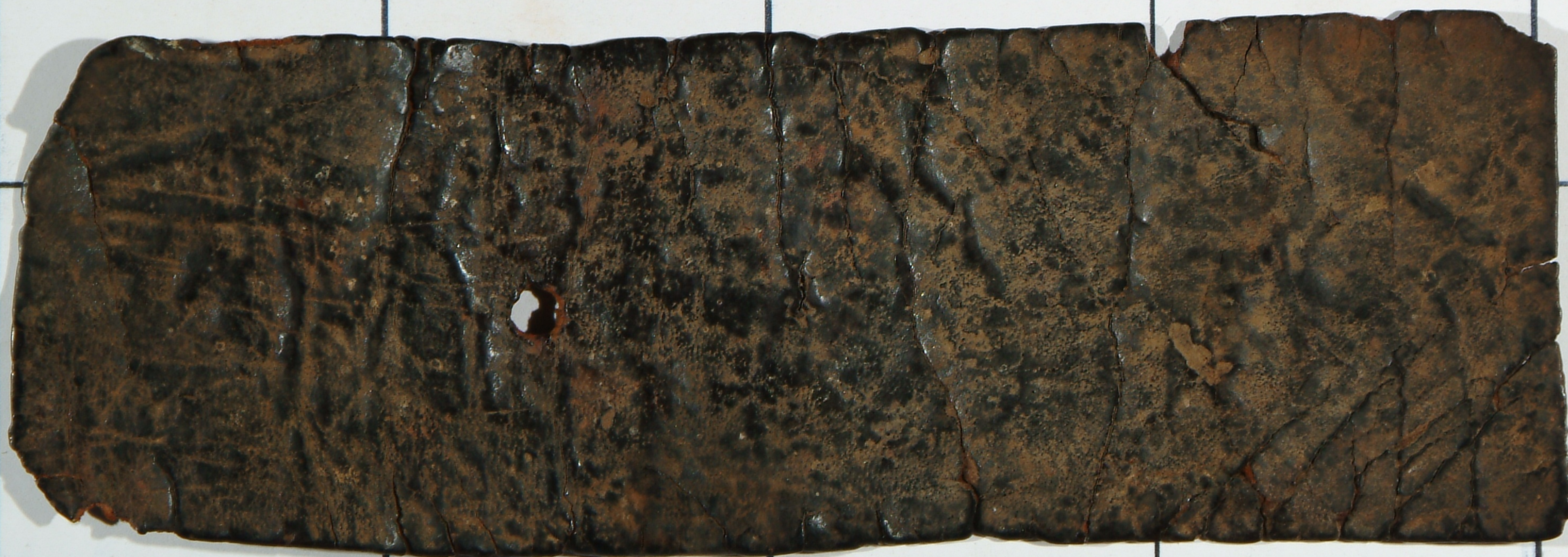
5

10

15

20

25





CMS

5

10

15

20

25

15

10

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

कुरुत कुरुता वरुवजयन्त नित कनार्या वरुमां कदरं यश्चनय क
निष्ठादर्यं यस्तमिति गोसा कतिरिमदया स्मारयुक्त समायनः
सद्य कनार्या अ कनार्या गो वामार्या कयानखद्वारादभनो गऊ
त हं कानमवदि शरवः स्रद्धत हं कानातु पुनृ कनार्या सिः दश
दिग्विद्यानाकथ हं कानमवदि दशकाध्वम सयेयेत आ कयदाध
य नितानरुत नात्रा मरुदत नाय ॥ धनसि सनातयाय वन कान

5

१५॥

यानवाय ॥ वरुचन्दननयन ॥ यस्तकायात्रनय ॥ ॥ यज्ञायामा प्रानिमहस
मयश्चान्ता यन्याग ॥ यकयदात्रयज्ञा ॥ ॥ जायमरु ॥ **ॐ वरुकीलसयमवति**
याचय हं ॥ १०८ ॥ धन ॥ धनुत्रिमरु नजयया हं वरुनथिभंतयग
धनीलेतायक ॥ मरु ॥ **ॐ धयवाहय २ सवेइकानरुद ॥ ॐ कीलसय २**
सर्वपायात रुद ॥ ॐ वरुकीलसय वरुधन आ शाययति स्यादा ॥ नायधनका
व किर्तयोर्योर्तयज्ञायक ॥ धनयत्रानदडी मरुतवृजायाचक ॥ मरुतकात

15

10

5

0 CMS 5 10 15 20 25

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ता ॥ मनुसं मतिटि न्यता नरुन. प्रकाच कं विद्य को सता दिवि धिय विर
क विराय मनुसस्य नूयां निप्रय वा उभा दि को या यया धिती का नि स पुर
गं यय क लो क्त्वा तस्य मनु का नय न ॥ पु सा धि त वा ऊ म दाम मा य र
सम सत्ता नि त मू न धे धि नि स मा तो त स्त न च क्त्वा या द्या दि स्ता का नि वं न
म का जाला सा द वि रु र व जा दि मा रा न नि रा ल य प्र स्ता न द व ता च का ल क र
त्रि ल य थ स्त न स म य च क य वि र्द वि वि र्द ॥ आ क र्त्त वा या द्या दि नि रा ज न व क
स्त न य ज्ञा य य न्या स यं व य हा न य धी वा धा र्ता नि रु न द व क्रिया ज्ञा त क र्म

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ कं टा र्ग न य नि क्त्वा म य त ॥ थ न ॐ नम य अ नि
नि का य ॥ म का प्र सा ॐ नम य वा कं वि मि ना थ य क य या ई क म स का रु र दि ई
न प्र नि न्या वी ॥ ॥ ॥ थ न कृ ग म ग व न गो न क्रि ऊ क ऊ क नो ना रा या
न क्रि न कं ठा वा दा ॥ ॥ जा मि मा वा अ प्र या ध प्र या आ दि क ई व या य वा
थ द क थ य प्र य न य ॥ थ न नि वा य य ज्ञा रु न ऊ य य क गु न म नु न द न क

15

10

5

0

CMS

5

10

15

20

25

यक गह मा धन मिध प्रतय क म धुन थि प्र क कि न न वि स ऊ कि स मा धि
 क स य ऊ क ठ व व मु यित्या दि पूजा अग्नि थार्य अग्ना इति क म्भू य ऊ थ
 न द व य ऊ मा हा ति द य द व ता इ ति ऊ य ध म्मा ॥ थ न ति ना प्र स
 र्य व ग ह क स र्ज ण हा य क ऊ क च क चि न त र्य न कि ता र्य ॥ ॥
 डं घ घ घा ट य र स र्व इ क्षा न हं हं हं हं टा ड कि न य र स र्व या या न हं हं हं हं डं व ऊ म्
 ऊ न डं व ऊ कि न य व ऊ ध न आ हा य र्गि स र्वो वि ष्ट वि ना य का नी का य वा का च हं व ऊ की न य र हं हं हं

मन्त्रः

मन्त्रः

॥ डं न मा वृ द्वा य ॥ डं न म ४ शी व ऊ स त्वा य ॥ न क स द गु त्रि ॥ ॥ थ न ऊ ग व क म ॥ न द न
 नि य न द व ता अ त्मा स्या ॥ ॥ थ न त्रि द य का द व या इ व न थ य ना या ढा व ॥ थ न
 स्वा न रु ह न ग या व ॥ ॥ ना ग रा न न य स र्व न थ ग ग स रा ह न र्य ॥ स र्वो वि ष्ट स त्व
 न र्य मा धु न य ४ य त्रि य र्गि स र्वो वि ष्ट वि ना य का नी का य वा का च हं व ऊ की न य र हं हं हं
 जा ॥ थ न स्वा न ऊ ढा व हा थ ऊ त्र य न य ॥ ॥ डं स र्वे ग थ ग र्ग स र्ग द न र्य ॥ स र्वो वि ष्ट
 त्रि त वि ना स न मि र्ग न मा मि र्ग ग र्ग ४ व हा ४ य त्रि य क स मा ऊ नो ता थ हा ४ स म य र्ग ॥ ॥

॥ ॥ धृतय उयावः खानतिनक ॥ ॥ निधाकजमान् जवयमवमदिचकहाथ
 जाऊनयम ॥ ॥ यायायस्य दधधस्य धययाय ॥ याथनायाठनमध ॥ रुगव
 नअमूकसर्वे विद्याजाऊनमाकुरुः कुरुमिहामरुनार्थं यतिस्वकनूनामर्कः गिष्या
 ॥ मर्कस्याययुक्ताकयु ॥ ॥ जतायवः कसमरुकस्यरुगवनः यसादेकुरुमहसिः य
 धाहिसर्ववृद्धामुचिनम ॥ ॥ यतिस्विकाः मायादेयायधकक्रीः नदलिमूनि वृद्धाक
 गा ॥ अगुस्वमरुनार्थं कृत्वा युष्यादिकां मानशुद्धानः अमूकस्याधयः बोधिस
 त्वयवदय ॥ समत्वादसुगुणी वृद्धाजगवक कियार्थं दोषो बोधिः सत्वाधयावन्नाम
 चक

कुरुवता ॥ दवता सा कयाचायुरु तासं वाधिसासिता ॥ ममनारिस्तता सत्वा यकचिद
 ऊवकुरु ॥ अमकाहं महावर्जा यतिस्वविधिं सयुगा ॥ कात्रिथाभिजगत्सद्धेयथागक
 यचात्रत ॥ अनुकम्या मयादाय सद्धिष्यस्यत्र तमम ॥ सर्वस्याम्यकिं क्षयासानिधं
 कुरुमदध ॥ ॥ धात्र उयदय ॥ अयमसह लीजर्मी सह लीजो विर्गवम ॥ समयस
 वेदवानी रुविगाहिनमसय ॥ अवेवत्वे रुविशामि बोधिचिरेकं चरुम ॥ गथागनाक
 लात्यरि ममाद्यस्यानमसय ॥ अगुमदिवसाहय यक्षमहयमूर्कत्र ॥ सीनियानारु

न लीख न स्नानयाय ॥ धनं निन स्वाकंचिक न राय द्वाहा न स्नानस म कुरुतिया ज्ञा
नयिल ॥ मरुथ ॥ **ॐ** सर्वतथागतकाया वल्लभ धनं हं स्वाहा ॥ धनं त्रिय क वल्ल
न य न स्नान ॥ रा **ॐ** धनं ॥ यः सत्व जल व प्रधर्म सकर्म वजो मूडा कुलान
माहितस्य द्वियस्य क **ॐ** धनं ॥ यः सत्व जल व प्रधर्म सकर्म वजो मूडा कुलान
साकि कर्तृकयाय ॥ इ सक न क न मरुथ ॥ **ॐ** वज्र सत्व आ ॥ गव प्राचन च न न द व
न व क मरुथ ॥ **ॐ** आ ॥ नि प्र रुष न स्वाहा ॥ **ॐ** आ ॥ अ मू क वज्रा इ व नाम र तथागत ना

(नामा कं दू)

मरुव स्व ॥ देव या चू नाम इ न उ नाम कू या ॥ देव या नू रू उ न वज्र ल न धि र्म देव या
मरु न जाय चि ॥ याय रु जाय र्म ला य मू ॥ क र्थे न ॥ ॥ **ॐ** नि नार्म क प्र व विधि
॥ धनं नि नि धि न का कि या ॥ स्नान याय ॥ रा ध ध ॥ गो वज्र या वि स त्म वि ना व स
हितस्य अ मा द्य मि धि ॥ य त्म म्म ली हित क र्ज य प्र मा र्थ मि धि र्म म्म ली रु व
कु आ कि क र्ज क वा र्थ ॥ धन का दू या क व मू वि य म क ॥ **ॐ** दे य वा स म स्वाहा ॥ **ॐ**
वा ध रा द ध क व च व मू स्वाहा ॥ रा न द य क द व ॥ वज्र ना प्र वा म न द न नाय ॥

८८
धनप्रसाद

धनप्रितानामिमादस्तनकात्रादिं नुरुदा सनः मदतमाभियतिनिमनस्य
दिगतामं नखनदासं ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥
यै दगुप्रिस्तवातमं नकमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥
स्वादा ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥
तिदस्तया मनोविधि ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥

धनः वरुः नात्रा मरुदं नाय ॥ यतिवद ॥ दिगतामं विय ॥ ताना आरुत्रनवि
८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥
ग ॥ दिगतायाजः दादा प्रयः मरुदं नाय ॥ यतिवद ॥ दिगतामं विय ॥ ताना आरुत्रनवि
नवृद्धा नी ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥
पायाथ ॥ आर्गि दाय ॥ नावायक ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥
दिगतामं समाधि ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥ अधनयायमनु ॥ ८८ ॥

अनुवाक

ॐ आः वमनीयति कृष्णाहा ॥ नासिचक ॥ कृष्णाय ॥ ॥ वयवकः सखसहायः ॥
सात्राय ॥ धनस्रोते कृष्णानमात्रात् दद्याभादभायिहृतयक ॥ ग्वयः ॥ ग्वयवियः
थनलिकलुपूरुजो क्रिया ॥ काहपातनहविय ॥ दुंदिवावासमसाहासा
खलुवतनकिचक ॥ यतामधिआदिद्यासासमस्त ॥ तयाडादवस्त्वविय ॥ यं
॥ यं ॥ मुति ॥ ॥ धनस्रोतयासन ॥ ॥ धनडयनयविधियाय ॥ ॥ धनयान
मरुतसवद्वर्तनय ॥ मरुयदय ॥ ॐ महासखवज्ज ॥ ॐ वं ॥ ॐ सनतर्वमिति

अनुवाक

॥ यमसर्वदवतथागतनासिहलेतयवकनहादिकृष्णोर्लवदाविहूययत ॥ धनः ॥
जामाने कृष्णानकाय ॥ दाथजाययय ॥ यान ॥ ग्वाध ॥ ॥ महासख ॥ महाप्राग ॥ मित्रम
वज्जगत्यति ॥ सर्वसत्व ॥ मनायायि ॥ सत्वहृदिष्ठित ॥ ॥ सर्वसत्वयिता ॥ यो ॥ कामा
ग्व ॥ समयाशिभा ॥ स ॥ यताननभनाथ ॥ कामास्ययत्रियुजय ॥ धर्मधनाधि
कानात्समय ॥ समभनेनौ दयि ॥ कृययासर्वसत्वा ॥ ना ॥ कृष्ण ॥ सर्व ॥ सिद्धियत ॥ खानयाम
गदवस्त्वहात्र ॥ यं ॥ ना ॥ य ॥ मु ॥ न ॥ ॥ ॐ यनयविधि ॥ ॥ नरुवृजकनध ॥

10

वासवाय स्वात ॥ यमर्गं न कमनयाति सर्वजो नीधरु च कायधे युवप्रकाशय युव
प्रकाशय युवप्रकाय तस्य साकाशा को स्य प्रस्य मगतस्य सखात्मकस्य तमज्जस्र
वठुत यत्र मासिषे क ॥ तदनृहं का प्रस्य व धुं क प्रसावयित्वा ॥ नृवा न वा
प्रमप्र ४ कामिदाधय ॥ योजो ॥ सखा हा सा जायाय म नृनद्रयया प्रसाव हा रुडा
याय ॥ ६ स वा व प्रसा विभा धन सर्वज्ञा न वा नान रुदय २ हं स्वादा ॥ द्रय या प्रख
न मरु ॥ ६ धर्मो ग द या धि क न स स्वादा ॥ थन हं च स्वा न याय ॥ जत्मज्जलं ग मरु ॥

तस्य जिनयसु तस्य जिनयसु न स कं रुता व व न मदा सखा विन न या प्रद्र मरु व जि
नस्य निस्य विनस्य तमनम वठुत यत्र मासिषे क ॥ वरु ता न वा मरु न ता य ॥ रु
न कं कम माद स ऊव न रु व स्वसि क था य रा ज स क न स ॥ धन न द्रा या न्न अ ऊ न
म व न रा व ना द स क त म न ॥ नृव न न म व क ॥ ६ ति न क रु व न स्वादा नाना
नृव त्व नि आदि आरु न दारु व न स्वादा ॥ ॥ वा क रु नि न कृ थ क मरु ॥ ६ का ल न य
के व द म क रं म हि न ति या य ॥ ६ रु स र्व व द्वा नी भु धा रु क न म रु न य मा क ॥

११
५
६
७
८

युजाताथय मकटयके कला रुवशा डं सर्ववृद्धे च मदि महामकटासि व मह
महकटयतिरुखाहा ॥ डं वरु प्रनंतां ॥ थकादिन वरु सत्वमूदानथियक ॥ थनवा कुरु
जिन धरवदुत्रकं याय क मरु ॥ डं वरु धातु प्रजी ह ॥ डं वरु वजी ह ॥ डं प्रनव
जी अरिषिके को ॥ ४ ॥ डं व प्रवजी अरिषिके को ॥ ४ ॥ डं विप्रवजी अरिषिके को ॥ ४ ॥
य ला द्य मु त ॥ ॥ ६ ॥ छि वृता कलु विधि ॥ ॥ ह चं खान रुक्ष प्रत ॥ रावना
तता निथन कटा ममा प्रस्य मूल्यता नरुन य प्रवदु मुखे यं जाता प्रच कुरु वरु वरु व

जात्रतयात्रिनामन समय सत्व निथ्याय ॥ रावना ॥ त त ॥ डं ख रावगुहो सर्वधमानी ॥ ख
रावगुहो ह ॥ ६ ॥ ख राय आकाश यत्र मदि राव ॥ यं का प्रह वायु मली ॥ ॥ वं का प्रह
गिमलुनी वं का प्रह मदा समदं तम अयोत स का प्रह वरु प्रमं योत माहनु मलुनी
तइयत्रि स का प्रह म द्वे प्रत मयं समनु विराय ॥ ॥ तइयत्रि ह का प्रह विप्र
वरु मयी रु मि विराय ॥ थन धय निजाऊन प्राहा गिरका ॥ ॥ निमिवा स युवा क
प्रयिकं गय अइवा प्रसधा न विमं माय अइवा प्रयहा मा सक प्रक प्रयय थंसा

[illegible]

माय आकृत्याव व्याधनादां हि म धा उ प्रिया रा व न र्य म ना न य र म धा उ प्र म र
 या व त्वो प्र वि य र न प्र या व ह ॥ ग म ध ध ॥ ॥ ०० ॥ य म ध ग र म धा रू ना ना क य
 रा क प्री ग र दित्वा पा नि ना पा नि वृ द्ध क ल्य य र्व रि ता य न रू न न म त्व न
 य रू पा या त्म धु नी रू न म त्व न ना र्थ का मा रू त्व य प्रि य प्र य र ॥ ध न व
 नि र्नि त्व य म रू ॥ ७ ॥ स र्व वृ द्ध य ज म नि म रू व ज र्व रि ४० रू रू रू रू
 प्र नि नि या र्वा क प्रि म ना मा य ॥ ध न क ल दा र्मा मा य ॥ ७ ॥ व रू रू म र म न म न स रू

कृत्स्न जायात न यतिश्चादवधियक ॥ य० यं० सो० यं० मु० गताकृत ॥ ॥ ६० ॥ तिस्र
 यिक्रियाविधि ॥ ॥ यतिश्चादवयाक स्वातन्त्र्यहानरयसावता ॥ ॥ गुरुस्वद्वीज
 मयूखे मजात० तथ ॥ गतवाधिमत्व विद्यादवर्णागले रागक्षमायत्रिहृदय
 अतमना नयाय गमथ ॥ गयर्मगलेदित कर्त्त० यत्रर्मयविक्रं यत्प्रक्रियाकनस
 मार्ये जतासि रुकं ॥ कृष्णजगत्तुरुगावात० मृत्तिगमकमिदं तन्मरीनरुवकुत यत्रम
 रुधक ॥ यथादिजाधौतुमागमायादि ॥ ॥ मृत्वनरुवतहाय ॥ ॥ ६१ ॥ त्रिजादकासिधक

ॐ हं ॥ य नो र्यं ॐ ॥ ॥ धनयक सगु कान नकि नकि श्री मन्त्रि र्ण वज्र जने
॥ धकादि न नकि श्री धि र्म्यं तं गु प्र हाय क सगु का जा हं ॥ नाय श्री कृष्ण त्वा क स्वा न
माना कृष्ण जाय सा य रि था म कृ थ ॥ ॐ ॥ ॐ हं ॐ ॥ व जी रु व ह ह ति
॥ धन १०८ ॥ स्नान मा जा त भय न प्र य र्थ ध म्मो त्या दि
॥ वज्र हा थि य ॥ ॐ स य रि थि रु व ज्ञ स्वा दा ॥ ॥ ॐ ति य रि थि रु व ज्ञ स्वा दा ॥
धन क मि हा त य जा ॥ आ रु दी न ग जा य स्व मि वा क य द र्य ॥ धन क मि न ज्ञ ह

16

माननं मिना न धि सं धि दात्र ॥ ॥ य न र्य ध न क दा न न मा नि ष य त क
न क स म ह स क र न क रु द व ता स व क स यि ड न वा य व ॥ या व ल म नू मि
ता द वा या व री ग म हि त न च डा को ग रा ला या व न ता व र्व वि ड यो
रु व ॥ थै अ थ न क रु द व ता स व ॥ क नू र्ध प ति मा सि नै क नू दान
दा न य त गं र्नि य षि स्व सि ॥ स व र ॥ ध न या अ र्थ क न ॥ ग ता क न
स्व धा न य नु य ॥ अ या क र य यो ज्ञा ना अ स्तु रं व म सा या वि रा य ल न म

ध्रि क ना थं त ल र्व न क रु म ह मि ४ क रु म ह रु म व द्वा द व ता न थ य व क्ता
या ला क या ला थ जा नि रु ता वि धि क्रिया ग नि स्व सि ॥ दा न य त म नू
गु दा य त म म ४ ॥ य ल्क रं ३ ४ क रं कि यि म या म ह धि या य न ४ क रु
य र्क ल य थ नो य दि ता ना मि द दि ना ॥ य ल्क रं का य डं या र्य य ल्क
न क रं वा रा डं या र्य य ल्क रं वि रु ड या र्य त स र्व क रु द ग या मि ह त मा मु
व र्ध अ न क ल स च वा य त मा मु स ल य का ण का म न स ल य नि षा य जा मा त मा

सर्वत्र कामो सहजो वरु ॥ **॥ धनवातपादियजा ॥ धननिजा ॥ न कुम**
लखनदाय चतुर्भिषु कजम ॥ स्वाना नैवश दियं मकुटावीदिदाय दत्तताद
सजायातन मिनाय सत्रयोजाधिराक यके सतकान कनकं त्रियममान
थकादिन वरुनधि यकं तय गुनय र्यधर्मो जाययय धनत्रिभुका
जामष दकुनो कते कयतनक ॥ **धनया दूति विय ॥ धनत्रुविहाति ॥ अ**
धमातिकावी ० वनि विय ॥ वत्रिमात्रा यउय ॥ शुद्धक वनि यूजायाय धन

हाम वादा नतयनेयाय ॥ **धनथकादिन मधुनधि नक** सकलमन स्वातहत
यमैरुतिंदाय यधुदूति वाधसमाक आभियाविय मधुन विमरुते स
गवत भादात यके मनुकात चतयूजा वादादय दकुसयूजा निस
वाववियक आभिया द दगुसक्रय वाकनकाय ॥ अत्माना आदि सम
सुदका वनि मयायक धनसमयाचक धनहम सत्वा दूति ॥ गताक न वि
मरुते सिन वनि मधुनयाता नागया आदि सकर्ष विमरुतेन म ॥ इह य

15

10

16

ॐ क ग म ण ड ध न थ य र स ॥ नाम का र्त्त व नि श य स धा न को य क य को
 ती म लु न या ना क ण ज्ञा य ॥ ॐ ता य ग्व जा थ न ॐ स व नि त र्त्त य र क
 त्वि म ज्ञा अ त्रि द त या ध र्त्त ॥ ॥ क दा र्त्त वा हा न मू न म हा न
 म ज्ञा न सा ग सि द्धा न ह न द्र म धा न न ज्ञा र्त्त ग्व जा वि ह द्र म धा न इ
 थ न म नु थ ॐ हं हं वी ज व ली हं हं ॥ ध न ॥ ॐ वि र्त्त क क य वि य

क
 ग
 म
 ण
 ड
 ध
 न
 थ
 य
 र
 स
 क
 ग
 म
 ण
 ड
 ध
 न
 थ
 य
 र
 स

ॐ
 क
 ग
 म
 ण
 ड
 ध
 न
 थ
 य
 र
 स

थ न ग्ग नि कृ ष स रा व ना ॥ ॐ व ज्ञा म णा द क ०० हं ॥ त क र्त्त म हा न क सा हा ॥ म न्दा कि
 नि ज ल ल य वि रा वा ॥ ग ढि नि षु क व ड हं का र्त्त य नि त र्त्त य व र्त्त र्त्त आ ल य न क य म
 क र्त्त न ग ल य वि रा व र्त्त य नि त र्त्त वा य व नि त र्त्त ड र्त्त य नि त र्त्त उ ग्ग न
 गि र्त्त म ध म र्त्त र्त्त र्त्त अ ध र्त्त य ग य र्त्त र्त्त र्त्त य र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त
 य वि र्त्त म य य प्र व र्त्त द र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त
 र्त्त

5

5

10

15

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

नमो भगवते ॥ यं धर्मो त्यादि ॥ अकारा मरुत वनि यं ला य मु त ॥ ॐ हिमालि
 कं भगवता विधि ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ नमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥ धन ॥ न कि न सावना
 ॐ ॐ यमि म नथा को न अक्षम क भु आ का न म य नि रं य क भु चि रं व
 जा का रं सर्व विद्या न का का रं को न कं हं ॐ वि रं यं ॥ ॥ धूय नि
 जा न वि धि र्थं भु जा ता य अ क न जा यं म न ॥ ॐ आ ॥ वि द्या न क क हं हृ ॥ यं ध
 मो ॥ पू य न्या म ॥ ॐ आ ॥ य मा न क क हं हृ ॥ ॐ आ ॥ यु र्जा न क क हं हृ ॥ ॐ आ ॥ पु र्मा न
 ॐ ॐ आ ॥ म ला व न हं हृ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

न क हं हृ ॥ ॐ आ ॥ वि द्या न क क हं हृ ॥ ॐ आ ॥ ट कि न क हं हृ ॥ ॐ आ ॥ नि ज न
 तु न हं हृ ॥ ॐ आ ॥ अ व न हं हृ ॥ ॐ आ ॥ ड हि म य क व न नि हं हृ ॥ ॐ आ ॥ स
 रु न क हं हृ ॥ ॥ अ कारा मरु त त्यादि ॥ ॐ हि न कि य जा वि धि ॥
 ध न नि ता न म क न वि क र्थं य के रा कं भ गव न हा रं न कि ता व क ॥
 ॐ य जा य दा ट थं ॥ सर्व दु ख नी त्यादि ॥ ॥ स्ना न दू द्वा ज न रं सा व ना ॥ ॥ न न
 ॥ स्व रा व भु द्वा सर्व ध र्मा रं स्व रा ड भु द्वा ॥ ॥ ॐ य या र्थ आ का र्थ य न म वि

२०
 साय ४ र्यं का प्रल वायु मलुनं प्रं का प्र नो मि मलुनं वं का ल न म हा स म ड
 त म अ यी त रं का प्र नं प्र ठ प्र मु यी त मा ह म लुनं त इ य त्रि स का प्र ल म लु प्र
 ल म र्यं स म नं वि रु
 साय ४ ॥ त र म अ य
 रं वि रु साय ॥ ॥ वि धि थं वृ ज्ञा ॥ धू य नि ज्ञा न ज्ञा ह्यं गि ज्ञा द व ता ह्नि
 गृ ज्ञा या त न मि ना प्र थि य कं य क्क गृ त् कान न कि त्रि क न कं व ज द ध का त्रि स

धियर्कर्म मिताजस्यूजा ऊर्ध्ववा अकाजमूखत्वादिः वज्रिः ॥ ७८ ॥ अथ
 हिनवजस्वाहा ॥ वज्रमिथक ॥ ७९ ॥ अथ किञ्चनविधिः ॥ ८० ॥ अथ अग्निप्रिया
 क्षामसस्वानन्दहा वरुणस्य वज्र ॥ ८१ ॥ अथ अनादिर्माद्विद्वद्विम्ब
 मिथयर्हिमीदृश ॥ ८२ ॥ अथ अनाद्यामहावज्रिः कथितानामसंज्ञान् ॥ ८३ ॥ अथ
 शिवामहाऊर्ध्वसत्वा नृगुहकाजका मूककर्म ॥ ८४ ॥ अथ अनादि
 रजः ॥ ८५ ॥ अथ अनादिमात्रावज्र ॥ ८६ ॥ अथ अनादिस्वकाठसः ॥ ८७ ॥ अथ अनादिद्वय
 रजः ॥ ८८ ॥ अथ अनादिद्वयस्वकाठसः ॥ ८९ ॥ अथ अनादिद्वयस्वकाठसः ॥ ९० ॥

15

10

२१
॥ यासिकाश्रुति
तावत्त

॥ ॐ अमृताग्रय स्वाहा ॥ आहूतिवियमरु ॥ ॥ यासिकाश्रुति ॥
सिकाश्रुतिविधि ॥ ॥ थनसा निकरुजसा दानवियधनरुनू जरा
संस्थानरुहप्रत यक रावना ॥ ॐ अ॥ ४६ ॥ दं दं ॥ तनुजसितागि
मध्यकाजजं यः ममात्रय राइयजिर्वजागागि म गुल नू कागो
रुवंधुतवधुं चतुजं अमिनारुभासितं दकिरा वनदयप्रह सकि
टिकाकसण कलुका भंखधर्ज मदासार्क ॥ शुकावनधधर्ज ॥ भाकि ॥

5

॥ यासिकाश्रुति

कागि विराय ॥ ॥ १६ हिमदरु सदवसिद्विज सरुम ॥ ॥ ग॥ रुखा रु निमद
सुक्रिसतिदिरुव वज धन आश्रययति स्वाहा ॥ थन आहूतिवियमरु ॥
ॐ वायकाग्रय स्वाहा ॥ ॥ १७ ॥ थन वजिमात्राय दयवजि विय ॥

ॐ मतिधनित्र कतिमहायति सलं अमृक गृह सवे विग्रह नरुन नाग नागय की रु
रुद रुद स्वाहा ॥ ॐ वधु सवे विग्रह रुना सय कि रु रुद स्वाहा ॥ ॥ १८ ॥

ॐ अमृताग्रय स्वाहा ॥ ॥ १९ ॥ थन वजिमात्राय दयवजि विय ॥ ॥ १९ ॥
॥ ॥ १९ ॥ थन वजिमात्राय दयवजि विय ॥ ॥ १९ ॥

॥ यासिकाश्रुति

२२



सिद्धिं प्राप्नुयान्मन्त्रं कृत्वा
 विक्रमो विष्णोः कंठं मन्त्रं
 किं लिख्यमानं कंठं तं कृत्वा
 गोप्यं भक्तानाम् तं मन्त्रं
 सत्त्वोत्साहः ॥ अथ मन्त्रः ॥
 वाय



(वायुः यकः कृष्णायुः
 मन्त्राकावली ॥
 दक्षिणमूर्तिः ॥
 योऽयं मन्त्रः सर्वदा ॥
 इत्यत्र लिख्यमानः ॥
 अथ मन्त्रः ॥
 वेदमन्त्रः ॥
 वायुः ॥
 ॥ साधनं मानं यावत् ॥
 दक्षिणमूर्तिः ॥
 ध्यानं ॥



युः ॥
 दक्षिणमूर्तिः ॥
 योऽयं मन्त्रः ॥
 इत्यत्र लिख्यमानः ॥
 अथ मन्त्रः ॥
 वेदमन्त्रः ॥
 वायुः ॥
 ॥ साधनं मानं यावत् ॥
 दक्षिणमूर्तिः ॥
 ध्यानं ॥

(पिथि) (वनिपूजा)
(स्वाहा)

(ॐ) हं दृष्टुं कृतं यत्नीनमः स्वाहा
 हुतं कृतं लुप्तं यत्नीनमः स्वाहा
 हुतं कृतं किनागनाय नमः स्वाहा
 हुतं कृतं यत्नीनमः स्वाहा
 हुतं कृतं यत्नीनमः स्वाहा
 हुतं कृतं यत्नीनमः स्वाहा
 हुतं कृतं यत्नीनमः स्वाहा

同

इन्द्रादिनायनमः ४

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 यो मया प्रोक्तः स भगवत्पदं ॥ यो मया प्रोक्तः स भगवत्पदं ॥ यो मया प्रोक्तः स भगवत्पदं ॥
 तं कुरुते ॥ तं कुरुते ॥ तं कुरुते ॥ ॥ यद्येतावदुक्तं
 कृतं योना अकारं विज्ञेयं विज्ञेयं विज्ञेयं विज्ञेयं
 यताका ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 दृष्ट्वा हा ॥ कुरु यात्रं स मुकु ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 कं अतः नमो भगवते वासुदेवाय ॥ आ वा नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

दनुर्ध्यानमा मिहं सवा

ॐ नमः ॥ चतुः कार्ये ॥ आन ॥ ॐ सा था रि शी सि सि जि ना क अ व त न २ गो र्थ क न ह ह ह ह
 हा ॥ का या य य य म ॥ ॐ ह ह ह ह ह ह चतुः कार्ये नमः ॥ ॐ उ र्ग लु नमः ॥ ॐ व
 लु नमः ॥ ॐ व लु कार्ये नमः ॥ ॐ दि व नू यो ल्थ नमः ॥ ॐ मि हा सानि
 य ह ह ह ह ह ॥ ॥ ॐ ह ह ह ह ह ग न लु नमः ॥

[illegible]

५२ गुरुजीवादाद व विम

पञ्चक

[illegible]

१७५६

[illegible]

(अव)

ॐ मा ह भु वी म न म ४ स्वाहा
 ॐ ह ह न दाय मी य न म ४ स्वाहा
 ॐ न द वे नु र न वा य न म ४ स्वाहा
 ॐ त क क म ग न ग ज्ञा य न म ४ स्वाहा
 ॐ म न य य र्व ता य न म ४ स्वाहा
 ॐ इ इ त न वृ क्का य न म ४ स्वाहा
 ॐ स म ग ध न द्या य न म ४ स्वाहा
 ॐ द्वि क्षि म्पा र्या द स स्वा मि ति य न म ४

(शिवदत्त)

इष्टासाधनमः ४ खादा

[illegible]

二五五

附

[illegible]

नमः४५।६

五

(६) वृद्धसर्ग नमः ४ स्त्रोतः ।

[illegible]

धर्मसूक्त।

ॐ ह्रीं कृष्णाय नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॐ विष्णवे नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॐ कृष्णाय नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॐ ह्रीं कृष्णाय नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॐ ह्रीं कृष्णाय नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॐ ह्रीं कृष्णाय नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॐ ह्रीं कृष्णाय नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॐ ह्रीं कृष्णाय नमः ॥ स्वाहा ॥

[illegible]

15

[illegible]

(वायु वाजामुना न काय का न दो क व द ती का हः॥ वात्रि सि इ
 ना इ न ॥ डं डौं गौं हं हः दौं वा का दु र्य वि घ्नता मय रु ह स्वा हा
 क क पा न प्रा वा रु तं ॥ डं वा मु युं म ज ना कं अ व रु त र नी घौं हं हं
 म्मा हा ॥ आ वा रु ॥ डं हं हं हं वा मु युं य न म ह स्वा हा ॥ डं हं
 का न व रु स्वा हा ॥ आ वा न त य व रु त ॥ वा त्रि वि य य व
 य हा य य वा य डं नं वा न का म व रु ता रु तं वा मु युं
 म म यु त वा रु ती त्व रु रु ता दि दि म नै त्व दं ग क रु त्व य नं रु वा य
 अ ति ता द यि डं डं रु आ रु कं ग ति ता न रु क ति ता म न्या न व र्ग योः

॥ १०५ ॥

(कथ)

29

(ॐ) ध्यानमस्तु न वायनमः स्वाहा
 (ॐ) कर्कोटकनागनागायनमः स्वाहा
 (ॐ) केनाभयध्वनायनमः स्वाहा
 (ॐ) शशाङ्कनायनमः स्वाहा
 (ॐ) नेत्रं नातदीयनमः स्वाहा
 (ॐ) ब्रह्मी चक्रदंष्ट्रीतिथिनमः स्वाहा
 (ॐ) शुक्रायनमः स्वाहा

एतच्छिष्यः ॐ दायकः कुरु मत्तु ॥ यत्कुरु विदुः वदन्ते कुरु ॥ व
 सि. मत्तु ॥ ॥ ॐ कुरु कुरु ॥ वा वा मत्तु विदुः नाभय दृष्ट्वा द
 आवादा कुरु या मत्तु ॥ ॐ यं मत्तु ॥ मत्तु मत्तु कुरु मत्तु ॥ ॐ यं
 दृष्ट्वा द ॥ मत्तु मत्तु ॥ ॐ दृष्ट्वा मत्तु मत्तु ॥ मत्तु मत्तु
 यं यं मत्तु ॥ व मत्तु मत्तु ॥ ॐ यं मत्तु मत्तु ॥ कुरु मत्तु
 तु मा मत्तु ॥ ॐ दृष्ट्वा मत्तु मत्तु ॥ व मत्तु कुरु मत्तु ॥ ॐ मत्तु
 ॐ मत्तु मत्तु ॥ ॐ दृष्ट्वा मत्तु मत्तु ॥ ॐ दृष्ट्वा मत्तु मत्तु ॥ ॥

(स्वात)

ॐ अस्तु नवाय नमः स्वाहा
 ॐ नवाय नमः नमः स्वाहा
 ॐ नमः नवाय नमः स्वाहा
 ॐ नवाय नमः स्वाहा
 ॐ नवाय नमः स्वाहा
 ॐ नवाय नमः स्वाहा
 ॐ नवाय नमः स्वाहा
 ॐ नवाय नमः स्वाहा

ॐ वीथमय नमः स्वाहा
 ॐ सिद्धदाय नमः स्वाहा
 ॐ धामसनीय नमः स्वाहा

(यवतु यज्ञ)

(यकी)

ॐ गणपतये नमः स्वाहा
 ॐ गन्तव्यये नमः स्वाहा
 ॐ गन्तव्यये नमः स्वाहा
 ॐ गन्तव्यये नमः स्वाहा
 ॐ गन्तव्यये नमः स्वाहा
 ॐ गन्तव्यये नमः स्वाहा
 ॐ गन्तव्यये नमः स्वाहा

(यवतु यज्ञ) य नो य
 तुति त न

(यवतु यज्ञ)

ॐ दं दं मदानां यनमः स्वाहा
 ॐ दं दं नवाय नमः स्वाहा
 ॐ दं दं नवाय नमः स्वाहा
 ॐ दं दं नवाय नमः स्वाहा
 ॐ दं दं नवाय नमः स्वाहा
 ॐ दं दं नवाय नमः स्वाहा
 ॐ दं दं नवाय नमः स्वाहा

ॐ सिद्धाय नमः स्वाहा

ॐ नमः मदानां यनमः स्वाहा
 ॐ नमः मदानां यनमः स्वाहा
 ॐ नमः मदानां यनमः स्वाहा
 ॐ नमः मदानां यनमः स्वाहा
 ॐ नमः मदानां यनमः स्वाहा
 ॐ नमः मदानां यनमः स्वाहा
 ॐ नमः मदानां यनमः स्वाहा

ॐ नमः मदानां यनमः स्वाहा

मथ २ अ विद्या रुक्म २ सादा ॥ ३४ ॥ उं सवधमो वजाधिका नवजमलाका नभाननन
 गमनापेका नसरु ४ हं जीको ० मवलिगृह २ ख २ खादि २ सर्व इह सुत दमन करु हादि ही रुः
 रुह हा २ हं रुह सादा ॥ ३५ ॥ उं नमः १ जाहु ला सव नरु मात्राय विष इषाया विषरु कलाय ११
 वृत्तवालिनी संघटनिमिरुका तद्वि अजविध २ हं मवत्रिगुं ज। गुं जि गुं जं ४ सादा ॥ ३६ ॥
 उं नमो १ गगवत्यमहापुत्राय न सर्वशुभभक्तिकन आभितियागस रुह रुत्र ० मं वत्रिगभ
 पुष्य भूष दीपत्य गृह २ यतकन विगम रु रु रु रु विद्व यविषय वृ पुयागा दिरुन २ यरु २

नरुय २ ग रुय २ ग सव संकविग हं २ रुह सादा ॥ ३७ ॥ उं वसुधात्रिणादात्रिड इव सयद
 त्रिधी सर्वज रुला भीष्ट आगद २ ० मं वत्रिगृह २ ख २ खादि २ उं धात्रिनिममभक्तिक नुसक्ति
 सादा ॥ ३८ ॥ उं अत्रयवमरु गीय रुमादिताद रुन दक्षा यव रुकाकिम विपुताय नव
 रु यलम रुकाय मवि वत्रय वादय वृद्धि सिद्धि दायं ० मं वत्रिगभ पुष्य भूष दा ० सक
 नादा सहित गृह २ ख २ खादि २ मम सर्व सखी नाव भक्तियुक्ति नशां वत्रय गुफिं रुन उं आ ४ धी हं
 सादा ॥ ३९ ॥ उं शुक्रगगभक्त वजयागीनी जी १ नू ३ ख ४ ३ रु ३ अ इममतिद्धि पुयदु वी

चकटां उं आ ४ ऊं हूं ॐ दं व लि गृ कृ २ घा ट य २ स व इ द्वा त हूं २ रु ढ खा हा ॥ ४१ ॥ उं र ग व
 तिय रू पा न मि ना म हा ॥ अ त य म हा नि न ल क यं व य स क रु क ॐ दं व सिं लि गृ कृ जि यु
 यि व २ पु रू व द्वा नि हं क ल २ म धा व द्वा नी धि नी २ व धि व द्वा नी खा हा ॥ ४२ ॥ उं क न २
 ७३ स व क लि क न द वि गृ कृ वि वा द वि घा द न द्वि द २ ति द २ रं क य २ म नु स क य २ ऊं इं उं ओ १३
 हूं रु ढ हां खा ॥ ४३ ॥ उं न मा र ग व म र्गं व ल न क न ग य म हा व द्वा व ज या न य म म म क
 नां स व ग्रा धि सं का य य २ मा द य २ व ज या ॥ न आ क म य २ व कृ व ध यं भा वा व ध स व ग्रा
 धि वं ध स वी न्य मा न य २ पु रू धू प र्गं ध व नि गृ कृ २ हूं २ रु ढ २ खा हा ॥ ४४ ॥ उं ध का

[illegible]

15

10

5

0

वैष्णवकानिष्ठा यत्र कुमुदविषयवृद्धि विना सती महाथा (ग) न्वनाम मसर्वसत्त्वानां वत्र
कृष्णकृष्णमहालय ४ तात्रय २ दिश्वपि धी सोम्यमन्त्रि दं वत्रि गृह २ ख २ स्वा
दि २ स्वादा ॥ १४ ॥ उं पसत नागा अमिगमन्त्रि अमृतावा वधी ममसर्वी ध सो धनि स
वै सत्त्वाना वध कलि दं वलिं गृह २ ख २ स्वादि २ हं रुट् स्वादा ॥ १५ ॥ उं नमः
मेव यनाथ यगापि तविद्या यत्र न संपन र्म म्य कृष्णाय सर्व सत्त्वार्थ दिवि तत्रि
लाय दं वलि दिश्वग ध स सा पत मृप गृह मां स व सत्त्वार्थ स सा न इवा वृत्ता त उ (क)
य स म्य कं वा (ध) पतिष्ठा पयिष्ठा सि उं आ ४ हं रुट् स्वादा ॥ १६ ॥ उं नमो नवगुः

78

(वनिपुजा) य (विष्णु)

धनवनिपुजा ॥ वाहनपुजा ॥ वृषिपुजा ॥ वृषिकिराक ॥ उं नवभयमत्र धासाय सकि
का र्था यत न्त्रं यमुकदत्त भा र्थं ख ज्ञे धधेन सा मि ह ॥ य व ज्ञे क गं या र्थं य व ज्ञे
मन जायानि स वृषाय विनिमर्क स वृषा र्थं स गृह्णति ॥ ॥ अथा ॥ महादान ॥ उं भू यः
श्रीमद्वाग्भक्त सिद्ध गथा ॥ यथो द्दक गुरु द क लो वे व वृग म न्न क व रु म वृत्त प वृत्तः
पा (व) र त्र न स (क) निश (ग) जा म् दाय वा यु कि वृ ग्वा र्थं व र्त्त न पृथ र्त्त मो न या व र्त्त
स्य वाग्भक्त्या य यि म कृत्त क भं व र्त्त य वृत्त कृत्त क भं व र्त्त य वृत्त कृत्त क भं व र्त्त य वृत्त कृत्त क भं व र्त्त
सु इयं या र्त्त मिता (ग) अ न्य क द वा न य र्त्त नो श्री ३ स्वयं र्त्त स निधाने ॥ उं भू यो दि वा अ वा

[illegible]

॥ ॐ आवा कू कू मा नी व व ड ह ला स न थ नि स ह पु न य धा मा तां न मा मि य ज वा हि
नी ॥ वा म धु न क व धु मा नी य म रु ट क धा नि लि क षा गा कू न नू या व न मा मि धु न वा हि
नी ॥ म हा ले क्षी ण ग व धु क या न रु ट क धा न धी वि न्य गा या नू व द ना न मा मि सि रु
वा हि नी ॥ ॥ स र्य व ड न हं व द धा गि प ग व ड न था । रु रु स गि स लु क थ न वि ड
वा ड क रु क ॥ व धं व डा क व व क ड या नी कू मा न क । य रु ल य स न रु र्ण । क रु का
या व न य दा ॥ स द्वा य ड व स ला व म हा वि या म रु धि का भू गा धु मि नू ह च वि नू या शी

कृष्णवर्कं। मखादा मानयर्थका पुष्पमा मिमि रहा पुडं अर्कियुर्किं व वसं मिधिं कू
वदु भगवतं मया ॥

पार्थसंमर्त्य निदसया मि कार्यैवावाप्तिमनसा श्रेयस्वा यर्थमतिनमनूमा
दयामि नदववाक्षेयत्रिनामयामि न्ननयसन्ननैव जामि ॥ १ ॥

(६) नमः सा चक्षुः कार्ये ॥ ६ सा या गिनी मिदि भा कं अ व र त्र ३ थां यी क नु दं रु द स्वा दा ॥
 वा ॥ या ॥ यू य त्या हा ॥ ६ ह रु द सा च क्षु कार ये न मः स्वा दा ॥ ६ ड र्ग च र्ये न मः स्वा दा ॥ ६
 क्षु कार ये न मः स्वा दा ॥ ६ दि य नू यी श्वे न मः स्वा दा ॥ ६ मि रा स नी य दं रु द स्वा
 दा ॥ म धा ॥ ६ ह रु द अ व का य नी न मः स्वा दा ॥ ६ ह रु द प्रो डा य ती य न मः स्वा
 दा ॥ ६ ह रु द को मा जी य न मः स्वा दा ॥ ६ ह रु द वे ष्ट्री ती य न मः स्वा दा ॥ ६ ह रु द वा ज
 श्र न मः न मः स्वा दा ॥ ६ ह रु द पू डा य ती न मः स्वा दा ॥ ६ ह रु द वा स मु थ न मः स्वा दा ॥

२८। निष्काम

ॐ हं हं हं हं म दान क्री य न म ४ स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ वज्र वद रु न वा य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ
 द व वद रु न वा य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ न व वद रु न वा य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ वी न वद रु न
 वा य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ वि ज वद रु न वा य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ वि ज वद रु न
 वा य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ था न वद रु न वा य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ हं का न वद रु न वा
 य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ हं य न वद रु न वा य न म ४ स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ वा गु की ना रा जा य
 न म ४ स्वाहा ॥ ॐ क क ना रा जा य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ रं वा य न ना रा जा य न म ४ स्वाहा ॥

ॐ क लि क ना रा जा य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ य न ना रा जा य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ क क्री क ना
 रा जा य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ अ न ना रा जा य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ म ना य न ना रा जा य
 न म ४ स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ म न्य न्य व र ना रा जा य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ म न्य य र ना य
 न म ४ स्वाहा ॥ ॐ मा द न्य
 य र ना य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ हं म क र य र ना य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ
 हं द्या धा न्य र ना य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ क ना ग य र ना य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ था य र ना य न म ४ स्वा
 हा ॥ ॐ मा हं द य र ना य न म ४ स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ क द म्ब रु का य न म ४ स्वाहा ॥ ॐ ड ड म्ब

न काय नमः स्वाहा ॥ डं क न जे व काय नमः स्वाहा ॥ डं यु क णि व काय नमः स्वाहा
 डं व त व काय नमः स्वाहा ॥ डं अ नु व काय नमः स्वाहा ॥ डं इ म न व काय नमः स्वाहा
 डं व ह व काय नमः स्वाहा ॥ ६ ॥ डं क मा न दी ये नमः स्वाहा ॥ डं स म री ध
 न दी ये नमः स्वाहा ॥ डं नु द ग ध न दी ये नमः स्वाहा ॥ डं न व वी न दी ये नमः
 स्वाहा ॥ डं न द रा ग न दी ये नमः स्वाहा ॥ डं न न ऊ न न दी ये नमः स्वाहा ॥ डं नी न व
 मा व रू न दी ये नमः स्वाहा ॥ डं ह म व नी न दी ना जा ये नमः स्वाहा ॥ ७ ॥

७ ॥ डं य नि य शी न व म्यो नि धि य नमः स्वाहा ॥ डं द्वि ती यां द म म्यो नि धि य नमः स्वाहा
 डं नु को द म्यो डं ह ति यो न का द म्यो नि धि य नमः स्वाहा ॥ डं व रु थ्यो द म्यो नि धि य
 नमः स्वाहा ॥ डं य के म्यो रु या द म्यो नि धि य नमः स्वाहा ॥ डं अ नु म्यो अ मा वा
 न रु द म्यो नि धि य नमः स्वाहा ॥ डं स क म्यो व रू मा म्यो नि धि य नमः स्वाहा ॥
 डं अ नु म्यो अ मा वा म्यो नि धि य नमः स्वाहा ॥ ८ ॥ डं आ दि त्या य नमः स्वाहा ॥ डं भा मा य
 नमः स्वाहा ॥ डं अ री त ना य नमः स्वाहा ॥ डं व रू थ्य नमः स्वाहा ॥ डं व रु थ्य नमः स्वाहा

॥ ॐ शुक्राय नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ भूतिशाय नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ सिंहासनीय नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॥ ॐ ज्ञानाय नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ कठय नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ कर्मोत्तम नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॥ ॐ अक्षयिणी नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ अक्षयिणी नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ अक्षयिणी नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॥ ॐ अक्षयिणी नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ अक्षयिणी नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ अक्षयिणी नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॥ ॐ अक्षयिणी नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ अक्षयिणी नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ अक्षयिणी नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॥ ॐ अक्षयिणी नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ अक्षयिणी नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ अक्षयिणी नमः ॥ स्वाहा ॥

॥ ॐ सिद्धिदाय नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ धर्मात्मनय नमः ॥ स्वाहा ॥ ॥ ॐ गंगाधर नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॥ ॐ गंगाधर नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ गंगाधर नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ गंगाधर नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॥ ॐ गंगाधर नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ गंगाधर नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ गंगाधर नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॥ ॐ गंगाधर नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ गंगाधर नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ गंगाधर नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॥ ॐ गंगाधर नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ गंगाधर नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ गंगाधर नमः ॥ स्वाहा ॥
 ॥ ॐ गंगाधर नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ गंगाधर नमः ॥ स्वाहा ॥ ॐ गंगाधर नमः ॥ स्वाहा ॥

15

10

5

0

१३

विधिवाहनायनमः स्वाहा ॥ डं सुकिधायनमः स्वाहा ॥ डं ह्रमवयुषायनमः स्वा
हा ॥ ० ॥ डं मंमहाकायनमः स्वाहा ॥ डं वज्रमहायनमः स्वाहा ॥ डं द्रोणस्वाहा
डं महाकासीयनमः स्वाहा ॥ डं कासीयहं हृद स्वाहा ॥ डं कनानियहं हृद स्वा
हा ॥ डं ककासायहं हृद स्वाहा ॥ डं वज्रकहकायहं हृद स्वाहा ॥ डं वज्र
नासीयहं हृद स्वाहा ॥ डं वनाठिनिहं हृद स्वाहा ॥ डं वज्रठानियहं हृद स्वाहा ॥
॥ डं कण्ठयायनमः स्वाहा ॥ डं तीव्रवक्त्रायनमः स्वाहा ॥ डं वलुनीयनमः स्वा

हा ॥ डं काश्रीनमः स्वाहा ॥ डं आरुहं ॥ डं ॥ डं सीधिनमः स्वा
हा ॥ डं सीधिलेनमः स्वाहा ॥ डं सीधिलेनमः स्वाहा ॥ डं सीधिलेनमः स्वा
हा ॥ डं सीधिलेनमः स्वाहा ॥ डं सीधिलेनमः स्वाहा ॥ डं सीधिलेनमः स्वा
हा ॥ डं वज्रवज्रत
नागनागजायधियतनमः स्वाहा ॥ डं अककनना
गजायधियतनमः स्वाहा ॥ डं अककननागजायधियतनमः स्वाहा ॥ डं अककनना
गजायधियतनमः स्वाहा ॥ डं अककननागजायधियतनमः स्वाहा ॥ डं अककनना
गजायधियतनमः स्वाहा ॥ डं अककननागजायधियतनमः स्वाहा ॥ डं अककनना

CMS

5

10

15

20

25

वना ये च युग का अमहात्म वीदा नो गो मदाय क नीला वयत् ॥ ॥ ॐ वज्रो क
 मत्यादि ॥ धन धूय सता न विधि थियु जायाय हाजा दजा मे ३ २ कायक ॥ ॐ
 सावलि मदाय क नी ॥ य वयुग य निवा ना ना वृद्ध वा वयतिया त्रिनि सन २
 स वया यान स वय क ॥ ॥ ॐ य व म य वृद्ध यि लु का धर्य ग २ क २ को सा हा थ
 सयु स्या मे ॥ ॥ ॐ ३ य २ वि ३ य २ स न २ ह २ ह २ हा जी गो स व ३ ३ क २ सु नि

स्वाहा ॥ ॥ धन धे धर्मा अका न म ख द क नो क य व त य ॥ धन व लि थ य न य व
 शि विय व नि मा ना य न य हा क २ ग य धन वि क न क य क ॥ धन हा व विधि
 थ व नि यु जा या क २ ॥ जा म ल स धि न स क स न सा न ता न स ग न र द
 क २ म यु जा आ स वा द ॥ वि स र्ज न ॥ म ल या ना स व ला य इ हा व हा व भा हा
 नि का य अ ज न द ज न क ॥ म ल ॥ ॐ ३ क २ स म क २ क वि रा ध न स्वा हा ॥ क सा न

15

10

5

0

कायं हाथकयमयं स्तायाय ॥ जलया ॥ ० ॥ किं ताद वि गोत्रवत् सम इति ॥ ० ॥
 गिरवदती नमा मिजमन भाद नि य के नीं तातयुवक यत्रिवा रं महा सर्व वृद्ध
 हासनस्तद विहावति ॥ युव मा म्यह ॥ ॥ थन नमस्का जयाय ॥ आ न स कय
 मव न क ऊ हा रुयय व ॥ सम य काय वि य धिय समया व क ॥ ॥ ० ॥ तिथा
 हा न नी यू जा या य रा व ना वि धि ॥ ० ॥ ॥ ० ॥ न मा रा व थ्य र्य आ य शी म हा हा

सुनमिपय

न गौ द वी य न म ॥ ० ॥ न य था ॥ ० ॥ व न व न व द स्वा हा ॥ ० ॥ द द य ॥ ० ॥ म हा वी य अ य द न ग
 स न म हा व स य या क म ॥ अ मि म वा स य न गु या ग र हा त द म म हा का रु ध वी ॥ ० ॥ द ग न
 यो नी अ न क म र्ध म ह म ॥ रु क अ जि न अ य जि न अ मा य इ द म म ह मा कि स र्ध न
 थ रा ना धि रा ना धि मि ॥ न स र्व द वा ना त दि न यू जा मि नि ता कि अ क य अ धा
 न धा न य मि नी मि रु क म न व क का हा या नी व जा मि नि ता कि अ क य अ धा न

CMS

5

10

15

20

25

[illegible][illegible]

15

10

5

१२ (थमिधून हाडी धका निवव जाय साकिता कपद यं द न थयूक्त न ज हाय धुका जि यात्रा जाय धन न क ये
म २ समय २ सान्ने दान्ने २ समासाय २ अनालं क २ तनी ध य स वा न म हा न ड नि गी क न नि
वीन स व व दाना धिस्का ना धिस्कि र सा हा धा न २ स व न या य ॥ डं व गु ध सा हा वा का थ
२२ डं व रु रु वा य सा हा ॥ य न क या य ॥ डं व न ड वि न ड सा हा ॥ व क न म ध न ॥ डं व ज धा ड
ग र सा हा ॥ धा मा स ध न ॥ डं व ज म ड न मा का न य २ सा हा ॥ वा वि न ॥ डं व ड क र क रु
द य २ सा हा ॥ वा ता क थ न ॥ ॥ डं ध म धा रु ग र सा हा ॥ आ रु न थ न ॥ डं ध म न क सा हा
धि का य ॥ डं धु य ति धि र व ड सा हा ॥ आ स न त य ॥ न क य थ थ य ना ॥ ॥ डं व ज धा ड य व न

धन न क ये
१२

म ग य धा य धि र सा हा ॥ वा या दि अ य ॥ डं व ड न रू धा क म न ॥ डं व ड धा ड ह ॥ म ध ॥ डं स व
वा डी ह ॥ य व ॥ डं न ल व डी ह ॥ द कि ॥ डं ध म व डी डी ॥ य धि ॥ डं क र्म व डी अ ॥ ड न न
डं व ड म ल ह ॥ य व या म धा ॥ डं व ड न ल गुं ॥ य व ॥ डं व ड ध म डी ॥ द कि ॥ डं व ड क
म अ य धि म ॥ डं व ड म व द ॥ डं व ड न ड ड ॥ द ॥ डं व ड न ड ड ॥ डं व ड सा धु स ह
य ॥ डं व ड न ल ड ॥ य ॥ डं व ड न ड ड ॥ द ॥ डं व ड क रु गुं ॥ ड ॥ डं व ड सा स सा य धि म ॥ डं व ड
ध म डी ॥ य ॥ डं व ड न ड ड ॥ द ॥ डं व ड न ड ड ॥ ड ॥ डं व ड सा य न ॥ य ॥ डं व ड क र्म क र्म य

[illegible][illegible]

विहिनदयक वाकमरुयक वशयदाजगुजायाय ॥ याइ कङ्क
 व सग्वन नाथा वजिरुडा जग्वज्रन थायत्रय रित्राय गुत्रमवु
 न यकेरायय मिधुन याथ गवय मवुन धिनेक साननन
 मवुन विमडन नववजि यिनाय पूजायाय गिसमाधिक
 भाधिवामन धनमगि थायन मुम्भूति ॥ विधिधं पूर्वदवायजा द
 वगाइति ऊधमा धमिधुतडाडा ॥ नकथेयदाम सखात्रनयार्थ

विपुत्रे यथ मपदा

मङ्कफयतिष्ठायाय नामक वृता वज्रनधिमं जाय ॥ डंनमः सर्ववर्द्ध वाधिसत्वर
 आवादीयहं र्व ॥ ॥ धनधनडाडा धम्मनियति कम्मोर्क धनतर्ष सकेयं य काक
 २ क थायक ॥ गुत्रमवु लदनक यक गयवियक सकथेय पूजायायक धनि
 वाकायक ॥ धनजङ्ग मवुन वायक दवस्तदाहाजय लक्रमवुज मुति ॥
 यावधस्व नमाभिवृध निधं भक विवृद्धास्वर्यवृद्धास्ववृद्ध वाधनाथ मरुयन
 गदिदगुधव तस्तेरान कयामिवजवजधुक इहा के न कदि नानादगरासताय
 गुत्रविमतिपाकात्रिलेनमः ॥ ॥ नकथेयसखानयामनक्षत्र ॥ सर्वकका

मं हाथ जाड नयं श्रीन ॥ ॥ धनख कन ॥ समचाद नहु मा दशास दिरु ॥
 न कमन य क विरु याडा जिदिग मं श्री हा कया नया दि न ॥ ० ॥ सर्व वृद्ध वा
 धिसत्व मय प्रत ४ म वृत्त धा गत वज प्रलय क वि श्व क भा व स्मिता य ॥
 समस्त वृद्ध वाधिस त्व रु धा गत या दु व न समस्त रु धा गत ये वा व न अ
 कारु न रु मं र व अ मि ता रु अ भा य मि धि थ य नि दा क्र या ॥ ॥ सर्व मूढा विद्या
 द व ता ॥ ॥ समस्त द व या म डा विद्या या क र्म गु र्वा ध ध र्म ॥ ॥ अरु म म क ना

अमृक ना मा द स स दिरु ४ ॥ ॥ ऊ य नि स थ व २ नाम क्रि धा व जि दि ग म श्री हा त्र जि दि ग
 म श्री हा त्र धा गत या क ॥ ॥ अ मि ना गत य ल्य य ना नी सर्व वृद्ध वा धि स त्वा नी ॥ ॥ ता का
 न व रु नि क र्म या व द न व यी व गु प्र या व स व क्क धा थि रु त धा गत या अ व क ॥
 य ल्य क वृद्धा अ व कारु म्य क रु म्य य नि यो रु धा प्र सा समस्त सत्व य नि य ना सर्व
 सत्व नि को र्वा नी व ॥ ॥ ॥ न रु व ल्य ध र्म य मा ता न ड ल्य नि या क रु या त ड ल्य नि या
 रु धा प्र सा स स सत्व य नि म नू र्वा ड धा प्र या य या त अ र्थ न ॥ ॥ सर्व य ल्य म नू भा द

२ क०

५३ दयामि, विसत्रहदभसदिक, अवेवलिक ॥ ॥ हसिकयधगुसिधर्मकयनिसनध
ननयायाहनन, रुमिससससुपायमायुत ॥ ॥ धर्मत्रकयवैरुताय, दभसदिकसर्वव
दानी ॥ ॥ थगुनिपूथयायधकैद, यथमइ जिदिगसत्रादतथगतयनिसर्त, नक
०३ अथयात, धर्मयावक का ॥ ॥ रगतवकायत्रिनिष्ठाकामानायाथयजिनि
वोनाय, धत्रयैदिसंध मी ॥ ॥ तथगतर्त, डमधुत्रियुथइधक, कन्यमद्व
॥ थगुत्रिधमोयुथ, कृष्कनयनितनाह, रुयाय ॥ ॥ थनअथयावक ॥ नू, इ, ता
य, अकत, दाहास्त्री ॥ ॥ डनभावदाय, कन्यासामितहदयाय, यनामासमचिक

य, तुं धाठुर्कमलय, सलानी इ४ एवकनूकानूहादियगन्धजसाया, डयगुर्जमी, सर्वसत्वा
नी, नरुवाया, सम्यकसे, क्विवा, अपुतिहानायनाय, सगतवडुथहा ४ दानयति, र
मेलकवैत्यरुदानकाय, अर्थयुगिरुस्याहा ॥ ॥ ठुत ॥ नमस्तुसर्वसुयायाना, जिने
धाठुकलठुक, सर्वव हात्रयथैयधर्मधाठुनभामुत ॥ ॥ वलितिय, तभा
मुर्कयदिकानी, सर्वत धागती, ताफिधर्मतावर्जनी, अ४ अस्म, स्मकतावा, कि
मससि, हज२ स२ स२ वीरनाग, वधर्कमजत, स२ स२ स२ स२ वना, हस२ यगग
मसदावल, सक२ ही, क२ व, सागत्रखाहा ॥ ॥ धनधर्मयति, प्रादात्रिका, तिया

15

०५

10

ऊन गाऊना मतह मखाइति मरुं नय मताऊन मधुन दडाविस ऊन याव
 क॥ धन २० न कसैल्य खल्य दासैतयक यजा यावक॥ य के मतका नदि स यजिषा
 याय॥ ॥ ॐ मसि गत दिक् कल २ धर्म धातु ग रं स्वाहा॥ तायन प्रय मवज
 न वजन थिय धन न कसैल्य यकिया दियुजा दवताइति ये भर्मा जय॥ १
ऊन मः सर्व वरं धाधि मखाओ ४ वी ध रं धं धन आइतिया यक्ष १०००॥ द
 गवत्रिये॥ धन थका जिन मधुन थिजक कसान कास हाथ जाऊन यथास

5

कमायन याय धर्म यनि स कसान कास हाथ कय जय क्रिय द क धयाय॥ स्व
 जाकुइय॥ ॥ आकास धातु मरु व वा तथा गत दृष्ट तथे व गकु दृष्ट न गकु कथ
 यति मरु क म स द व द्धे मदान क म्य य जायि ला द ग माविक नू व य न स्य
 तिविध क व विद्यु ग क र सति क सद्य मना न धा ध मद्य मना न धा ध मद्य
 व ऊर्म कि न ज व सा न ॥ ॥ स्वात वासन नक्षत्रक ॥ ॥ धन सै सक म नै स्वा
 नत न य ध्याय॥ आसिनाद॥ मग्न नत य व धा न दू य द क ता य जा ग याइति॥

15

10

०१

॥ धम्मति यति स न जकरोत्यथि स मदानवाक्ये ॥ ॥ अयमो मरुपाभाक
 सिद्धरुथगन सम्यक् समवधे ॥ वद्वेकुरु रुडकस्य रुडत्वदुवेवधुतं मन्त्रकन
 हिमवजपाश्व जीव मृदीय कनियुग्म आर्यावक्ये यथरुमोलाग्म न
 पात्रदण्डय रुन्ध यी ॥ ० रुन्धकषी विप्रयाक खगनना धिवा सिनशी ३
 स्यरुवेय सनिधन वागमत्याया यथिकन के सावर्त्थी युर्वकन मीविरुपा
 डरुनक ३ ॥ रुवतगन अत्यगदवात्रयस्मान् ॥ अयकाय ॥ दानयति ॥ रुजमान

5

स्य आयुआत्राग ॥ ३ ॥ नधनसका शकामार्थ रुगवानुपा ३ ॥ कनके जवेत्यरुदान
 कस्य ॥ रुयत्यानुसावन रुजमानस्य यथाकम्भसु क रथाहनसं युद ॥ ३ ॥ आदत्र
 २ आकासे धा रुगद स्वाहा ॥ धात्रुदात्रके ॥ ॥ धत्रधत्रुदात्रके ताताक
 प्रथमवर्क निधमन् यकशाय ॥ ॥ धननिधिम स्वात रुदात्रक संसावन
 ॥ मतिदिगुल्य गा रुसं विष्णुसाजिकाया मध्ववजवजुर्मी युर्वदत्र अर्तक
 नित्रं दकिनयरी यथिम रुर्के क डरुनवाधुकि ॥ ३ ॥ मानमहायरी आरुर्मीव
 ३ धननिधिया दिववने स अरुवममयाय आसीत्वादत्राय नयन उदाय प्रकय यकग रुदात्र

शकनययथम ॥ ३

क. नेमत्य कर्कटक वायुया कसिक वरिअ सर्व तातां गतां मिमि खे त्रिद्य ॥
 ॥ धनय ॥ यथायहा जयजा ॥ यथायहा ॥ **डं वज्रवज्र** यथायहा ॥ **डं अतका**
 यथायहा ॥ **डं यथाय** यथायहा ॥ **डं तका** यथायहा ॥ **डं वासुकि** यथायहा ॥ **डं**
 यथायहा ॥ **डं क** यथायहा ॥ **डं क** यथायहा ॥ **डं क** यथायहा ॥ **डं म** यथायहा ॥
 ॥ यथायहा जयजा ॥ धनय ॥ अतका ॥ वायुया कसिक वरिअ सर्व तातां गतां मिमि खे त्रिद्य ॥
 तननन ॥ सर्वसर्व ॥ **डं अतका** वासुकि तका कर्कटक यममहायम ॥ सर्व

यात्रे कत्रिक वज्रहा यात्रे दवती महादवति ॥ मणिखि दधु धन अयना नह
 पुरतयो यनेया सागज महासागज अतकाये वतक महावक शाकाकि महाका
 कि सत्रय महासुव रुदादिक महादल ॥ मणित्र महामिनित्र आगया
 गक महानागमिनि घाति रुवदानयत रुद रुद स्वाहा ॥ धनयक चैव
 मिधमदात्रिमहाकत्रय ॥ ॥ नागया नय युड मात्रतये नागयत्र क ४ समय
 त ॥ **॥ कर्कटक ॥** **डं अ** मणिना कधना ज चैव कर्कट मया मिथ्या नमन क

३७ यायदवता युज्याभर्तृ कालाभूभाधनामस्यकचेल्यः पुनिकुसुवृतः ॥ नाग
धिपतिविनीतीकीत् गणनैर्वेपुषादतः ॥ ६० ॥ धीनिः २ हं जम्बादा ॥ मन्त्रकन ॥
कुमायन ॥ अन्नन पुत्रादयत ॥ ॥ निहाजये ऊसकमानियूजा दना
हान्न समयायकस्त र्वनघर्मामियाविय गतेचक्र डडितवत्याचद्यमा
कमिधिवदानगाथा ॥ ॥ ६१ ॥ तिप्रकचेल्यवृतविधिसमाफथा ॥ कञचित्तुया
स्वररुसेल्यस्क यथामसथागतवेडासायूजा अद्याविय ॥ ० ॥ ६२ ॥

[illegible]

१४
 १५
 १०
 ५
 ०
 ५
 १०
 १५
 २०
 २५
 ३०
 ३५
 ४०
 ४५
 ५०
 ५५
 ६०
 ६५
 ७०
 ७५
 ८०
 ८५
 ९०
 ९५
 १००
 १०५
 ११०
 ११५
 १२०
 १२५
 १३०
 १३५
 १४०
 १४५
 १५०
 १५५
 १६०
 १६५
 १७०
 १७५
 १८०
 १८५
 १९०
 १९५
 २००
 २०५
 २१०
 २१५
 २२०
 २२५
 २३०
 २३५
 २४०
 २४५
 २५०
 २५५
 २६०
 २६५
 २७०
 २७५
 २८०
 २८५
 २९०
 २९५
 ३००
 ३०५
 ३१०
 ३१५
 ३२०
 ३२५
 ३३०
 ३३५
 ३४०
 ३४५
 ३५०
 ३५५
 ३६०
 ३६५
 ३७०
 ३७५
 ३८०
 ३८५
 ३९०
 ३९५
 ४००
 ४०५
 ४१०
 ४१५
 ४२०
 ४२५
 ४३०
 ४३५
 ४४०
 ४४५
 ४५०
 ४५५
 ४६०
 ४६५
 ४७०
 ४७५
 ४८०
 ४८५
 ४९०
 ४९५
 ५००
 ५०५
 ५१०
 ५१५
 ५२०
 ५२५
 ५३०
 ५३५
 ५४०
 ५४५
 ५५०
 ५५५
 ५६०
 ५६५
 ५७०
 ५७५
 ५८०
 ५८५
 ५९०
 ५९५
 ६००
 ६०५
 ६१०
 ६१५
 ६२०
 ६२५
 ६३०
 ६३५
 ६४०
 ६४५
 ६५०
 ६५५
 ६६०
 ६६५
 ६७०
 ६७५
 ६८०
 ६८५
 ६९०
 ६९५
 ७००
 ७०५
 ७१०
 ७१५
 ७२०
 ७२५
 ७३०
 ७३५
 ७४०
 ७४५
 ७५०
 ७५५
 ७६०
 ७६५
 ७७०
 ७७५
 ७८०
 ७८५
 ७९०
 ७९५
 ८००
 ८०५
 ८१०
 ८१५
 ८२०
 ८२५
 ८३०
 ८३५
 ८४०
 ८४५
 ८५०
 ८५५
 ८६०
 ८६५
 ८७०
 ८७५
 ८८०
 ८८५
 ८९०
 ८९५
 ९००
 ९०५
 ९१०
 ९१५
 ९२०
 ९२५
 ९३०
 ९३५
 ९४०
 ९४५
 ९५०
 ९५५
 ९६०
 ९६५
 ९७०
 ९७५
 ९८०
 ९८५
 ९९०
 ९९५
 १०००

य. निवालास. कय २ लक्ष महाभक्त. दक्ष. दक्ष. लाया. निवा. धय स्वाहा ॥
 धमरुत. धिगुया. दक्ष. उल्लास. तया. दा. ना. सम. न. युमा. धा. यिगु. या. दक्ष. ध.
 न. र्प. विगा. रु. न. ला. त. ॥ वि. धि. त. य. पू. जा. या. य. म. धु. न. धि. न. स्वा. न. त. त.
 महा. दा. त. वा. य. का. र्श. ॥ दा. द. न. द. य. स. ना. क. ज. य. न. य. क. मा. य. न. ॥ य. नि.
 या. मि. त. दा. त. मा. वा. ल. म. र्श. म. त. म. वा. स. दि. व. क. न. आ. दि. ० वा. स. र्श. महा. दा. त. अ. श.
 दि. व. द. र्श. दा. दा. न. य. ॥ यु. न. ॥ ॥

१७ हं ब्राह्मणं शिवं नमः ॥

इहं सन
धरिमी
धरिमी
धरिमी

(१८) क. य. क. थं
 (क. थ. स. द. ना. व.)
 (व. नि. र. ज. ॥ थ. नि.)
 (१९) क. य. स. या.
 इ. ड. व. ॥ य. र्. व. ल.
 क. सा. य. रि. व. श्र. क. ॥
 ॥ द. श्रि. क. इ. सा. या.
 मू. ड. य. ॥ य. श्रि. क.
 यि. न. सा. या. ध. र्. व. ॥

१५ ग वं प्रलय क्षयः धूमिलक म न काय

म नारदजी इइती ॥ यं नमः ॥
धनिना ॥ यजनी ॥

विषयके विधि

15

10

गत्यः सर्वः धूमिपूजायाचकः स्वानुहाराप्रसङ्गः धूमिनिपातः यथायदाप्रयुजा
 १२ लास्याद्यधुवोदनेमुनिमरुतयेने॥ धननिगमिधायनः कथुनहासकिमा
 यायः सुप्रसङ्गः॥ धन निदवयूजायाचकः धूमिनिपातः यथायकः यथाय
 १३ गत्यवर्गधः धनमधुन धनकः यथायः धनमः स्वानः नवयः निमवाजः का
 जाः मरुतः सुप्रसङ्गः कायः सुप्रसङ्गः कायः सुप्रसङ्गः कायः सुप्रसङ्गः कायः सुप्रसङ्गः
 मूखः दक्षः लोकः कथकः सुप्रसङ्गः कथकः दक्षः धूमिधूनकाजः इत्यादिनाचाकय

5

जाः धननिगमिधायनः स्वानुहाराप्रसङ्गः धूमिनिपातः यथायदाप्रयुजा
 यः धनमधुन धनकः यथायः धनमः स्वानः नवयः निमवाजः का
 भावनार्थः वरधर्मः सुप्रसङ्गः कायः सुप्रसङ्गः कायः सुप्रसङ्गः कायः सुप्रसङ्गः
 कथाप्रसङ्गः धूमिधूनकाजः इत्यादिनाचाकय
 धननिगमिधायनः स्वानुहाराप्रसङ्गः धूमिनिपातः यथायदाप्रयुजा
 धननिगमिधायनः स्वानुहाराप्रसङ्गः धूमिनिपातः यथायदाप्रयुजा
 धननिगमिधायनः स्वानुहाराप्रसङ्गः धूमिनिपातः यथायदाप्रयुजा

15

10

5

0

यतिमः पायनः गतिमदसत्राहः थवायमैरुक्तकतिमिर्मिः ऊयतिमः किथियागु
प्रिः संखलं वो स्याद्विष्णुयमात्रधर्कः कलयात्रयतिमः कलकात्रा ॥ ॥ सैवेनैव
विये ॥ ॥ सर्वेयाय विनासाधैयताथयविमत्रमहाकात्रुतिकात्रुतिका
साधैदहिगरेययव कः ॥ ॥ हनाथरुगुनः रुसयशयतिः ऊयतिमः
यकेगरेयविमविष्णु नैधर्कः कलकाः किमिमहाससुयायभायकयातः थवनात्रि
नयविमयाययागः निमिर्मिः हनाथरुगुनः रुसर्वसद्यः विहाययाथविमशयति

ऊयतिमः धात्रेनसाधनयाहः गथयकेतथागयाआस्तः कलकात्रुतिकात्रुतिका
साहगुपेः धार्थिगुययगवाः ऊयतिमः विदुनः धर्कः किमिमहाससाधनायानैः विः
कायमात्रधर्कः कलकात्रुतिकात्रुतिका ॥ ॥ हनाथरुगुनः रुसयशयतिः ऊयतिमः
किनसैरुर्कः सर्वध ॥ ॥ रुविधुधर्कः कायवाकयिरुर्कः महाकात्रुतिकात्रुतिका
॥ ॥ हनाथरुसयशयतिः गथरुनयवकात्रुतिकात्रुतिका ॥ ॥ हनाथरुसयशयतिः
यतिमः उधनयाययागः निमिर्मिः यकगरेयविमयात्राहः साधनायानैः साहा

CMS

5

10

15

20

25

[illegible][illegible]

३ =

१ अष्टमालिकापूजा
२ वैद्यनय पुष्पायना
३ ययलोभुपायानुव
४ समानिक

इति पाथसेमायुः शगारुज क्रमायन आसिवा न सुगलनयक
दकतायुजा कथारिकक सधननियक नुमिनेय कमात्रि
पूजाक य धनुसस्रयकाय कमात्रियासिधायनिय
आ।युम काय सस्रव कडवा शोड कर्जव काय।ध
निनिगवनक किधिरुवागुरु ॥ ॥

२५

१ छंदमः ४ गीत जगत्त्रायतां होत्रक्षमाविधि आह ॥ नकस उवाय यजारुत्रधियक
गुनमलुन यवगरुकायविय सिधननयक मनुत्रधियक ककनक नीखव
त्रिधाय समाधिद गुनियाय कसयुजा ६० लादि विधीवतर्थ कसय
जा धनधूनहाव अ मिश्रय नयाय देवयुजायाय विधिवर यधधवी
घासाकविय गित्रदयाक मयारी रुडातसरुय आकासमध्याह आकाससंद
य ७ ना उकि कथर्थ यत्रसतय नुगु आरुज कायाव यत्रसतयाव समा

गिनक्षमविधि

डं आसर्वद्वयता अधिगच्छेत् स्वादा ॥ स्वातन्त्र्यं ॥ मित्रं ज्ञानं मानसं गुणं नवद्वय
 मित्रं ज्ञानं स्वस्ति वा कथं दधे ॥ मित्रं धर्मं सावकं इयं सर्वद्वयवनिजादा ॥ १ ॥
 कथं धर्मं दायं नृपं उदा ॥ यं च सा निधातुं मयि दद्वयं नृपं उदा ॥ स नृपं दायं
 नृपं दद्वयं नृपं दायं ॥ कथं धर्मं दायं नृपं उदा ॥ यं च सा निधातुं मयि दद्वयं नृपं उदा ॥
 ज्ञानं मानसं गुणं नवद्वय ॥ मित्रं ज्ञानं मानसं गुणं नवद्वय ॥ यं च सा निधातुं मयि दद्वयं नृपं उदा ॥
 द्वयं ॥ ज्ञानं मानसं गुणं नवद्वय ॥ यं च सा निधातुं मयि दद्वयं नृपं उदा ॥

ॐ नमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ब्रह्मसूत्रम् ॥ विष्णुवाचनम् ॥ कर्तव्यं तदपि यत्तु
याज्ञिकं दानं च ॥ अथ भक्त्या योगिनोऽपि कर्मफलं प्राप्नुयान्न मुक्तिरिति चेन्न
कर्मफलं प्राप्नुयान्न मुक्तिरिति चेन्न ॥ अथ भक्त्या योगिनोऽपि कर्मफलं प्राप्नुयान्न
मुक्तिरिति चेन्न ॥ अथ भक्त्या योगिनोऽपि कर्मफलं प्राप्नुयान्न मुक्तिरिति चेन्न ॥
अथ भक्त्या योगिनोऽपि कर्मफलं प्राप्नुयान्न मुक्तिरिति चेन्न ॥ अथ भक्त्या योगिनोऽपि
कर्मफलं प्राप्नुयान्न मुक्तिरिति चेन्न ॥ अथ भक्त्या योगिनोऽपि कर्मफलं प्राप्नुयान्न
मुक्तिरिति चेन्न ॥ अथ भक्त्या योगिनोऽपि कर्मफलं प्राप्नुयान्न मुक्तिरिति चेन्न ॥
अथ भक्त्या योगिनोऽपि कर्मफलं प्राप्नुयान्न मुक्तिरिति चेन्न ॥ अथ भक्त्या योगिनोऽपि
कर्मफलं प्राप्नुयान्न मुक्तिरिति चेन्न ॥ अथ भक्त्या योगिनोऽपि कर्मफलं प्राप्नुयान्न
मुक्तिरिति चेन्न ॥ अथ भक्त्या योगिनोऽपि कर्मफलं प्राप्नुयान्न मुक्तिरिति चेन्न ॥

द्वानविद्यविधि॥

गुहाये सये चंदमर्द वन्दभागी यत्तु वधरुथा, यदस्योते सति, शुक्रत्र जातिना
जं नाह कुरु क वृद्ध वजा कर्न, वत्त कजलि कुहू मानकं गुहाय कर्तुं कर्लि
कायी वप्रयदा ॥ सत्रो यदवमं झाकं महादि घामहद्विकी, धृत मधु विव
ट कर्तुं विप्रया कौक वप्रकं भयादि मोनययोना, युल मां मिमि न सास्यद
मन्त्रि युक्ति यमवै को सिद्धि कर्वरु गतं मया सये माम् महियुतु वृद्ध दवगुन
रगुनू ॥ भानि प्रना गुहा नाह कुरु ज मायतु स्मे तमुह गता क प्र क मायन ॥ ॥

वत्त सली मरु व्यादि पुनः ॥ सत्रे विप्रदह
दा नम दहना कायक ॥ दा नका ज्ञ गुप्रयुजा यायत डं वजा चार्यम लिखा ॥ दह
जामानस्य युष्मन्म ॥ क रवठ तनक ॥ डं वजा चार्य रुगदा न मस्य रुका यी युति
रुखाहा ॥ क रवठ न त्वं विय ॥ डं वजा चार्यम लि कायत नन्दनं मि प्रनक
खाहा ॥ चरन नैवक डं वजा चार्य रुखा न कस्य ज्ञाय विनाय युष्मन्म
ना ॥ ऊजम स्वात विय दानं ददामि ॥ ॥ धन कृष्ण हामु दान हन कं गय गु
प्रया नाहानि स दभं ऊजमान नवधन रुय दान वा कय दय ॥ ॥ अ यशी मरु

नाम यक्ष सा मरु

15

10

5

0

61

ममकमिंदतत्त्वमस्य वृद्धकुरुदकयशवेष्टनरुद्रिमवन् यवतनाह द
 किनयाय रुप्रसुखसु कप्रियम्य जावदिया वागुकिरुं आयोवरुंसदि
 मवतनाह दकिने यन्यरुभासाम्य तयात्रदम वागमर्या यकिम
 मकप्र सखितचः घोडतत्रक प्र कभा वली डतत्रक प्र याप्र गवय
 रुगिप्रिवत्र डवचंदयीरु रुत्र कणी वीनूयाक त्वगततो धिवामित्य अनग
 दवाप्रयस्त न गी ३ स्वयंरु प्रत्य सतिप्रन अद्य काय ॥ ॥ नाना प्राग डत्यनग

रुद्रनादिवयविधि

रुद्रयादवमथर्थ ॥ ॥ धर्तनिदक विरयक तिस्रप्राग जाकी कनद.हा विरय
 क. आसिवादविश वप्रियिवात्रख कायक मानकप्रथय गुनूयाकरुतिवि
 त्रिस्तितनक वातक नथय किननक आय ॥ वृष्टि यन विधि ॥ गुरु ॥
 ॥ ॥ एकाकात्राणि रुयं गुरु योकि विरुं रुताऊन ननत्रद्र मिदंरुं
 मितक नदय वा मसु गो दयो मिर वात्र वावनया सधम। मिरुवचुकमि
 योमि दवागिगुसं निधो वनध नरा या यत्रवत रा वा साता प्रसक साग
 वा मिरुदादि कर्त रा वा सा वा विभस पात का ॥ विद्यायतामृममृ

मरुतम

CMS

5

10

15

20

25

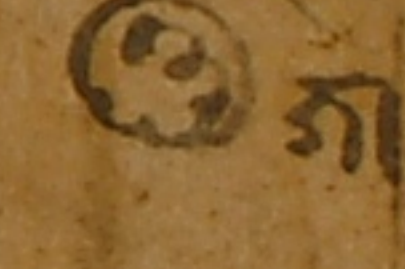
15

10

5

शतक

८२

समन	काम	तिसा
		
मिवात	युक्त	नकक
		
दिदव	कमा	मगना
		

एतं कामं गुरुवृत्त आहुत उचदिमन् धममदुषावा
 नमः श्रीवसुदेवाय ॥ जनकावधिमाद ॥ क
 नभाः सियतिनी यतिनह किमायु मग्न
 न कंभ मंत नककृजा कमासिगुजा
 ग्वस्मनास धृतिधयनया ॥ ॥ धननिवा
 य गुनमयुल यकगारु समाधि कंभयुज

शतक

दशयुजा कमासिगुजा दिदोवलिदिय ॥ ॥ धनमचालस्वस्य
 हय ॥ स्वसि कसयन गुनमयुलदतक मिशरावस्था यकंभ
 रुविश निजाज न वरुतात्रया मरुदनगाय कसर्जवन
 लाय जनकच विय वाकस्वानयक ॥ ॥ धनसियकि
 नस्वध ॥ धंआ ४ सवसमध निहंरुट ॥ दिगतात्रक स्वतिवाकेन
 वदस्यो दगुदडा वोनस्य मयानके ॥ धंतासिकनरुसायसा

15

10

5

0

हा॥ नकाज॥ डं डीं खादा॥ ना॥ सचक॥ डं समाधिदत्त सर्व॥ डन
 वृग्यितनखादा॥ डं आ॥ वज्रविककायखादा॥ ॐ स्वादि स्वाय॥ कु
 ७३ कु॥ सकदी॥ क॥ प्रवक्ष्यमिदं किन॥ मामनन्ता॥ ज्ञाय॥ यच॥
 वाहासयुजा॥ ॐ॥ निदन्तपासनविधि॥ ॥ धनयतिप्रविशदि
 गमायाज॥ डं दिवा वा समखादा॥ आहारमित्रका॥ ॥ धनकिमा॥ मय
 नकायक॥ डं सवोरुसनेरु खने खादा॥ धनकिटनकुति॥ चित्तयजा

॥ सग्वतविय॥ सिदुनोनय॥ धनकुमारिपूजाक्षय॥ ॥ धनकु
 जासाधनयाय॥ डं नमः समकुवृद्धातां गजावर्ज॥ कजावर्ज॥ ददुखादा॥
 डं आ॥ ॐ स्वादा॥ ॥ दिगमायावैवागय॥ नासिचक॥ डं डीं ॥ स्वादा
 ॥ नकमरु॥ डं या॥ ॥ यनमखादा॥ अरुता॥ डं या नायसमाना
 य॥ दना॥ डं कदा नाय॥ यासा॥ डं या नायनमखादा॥ चला॥ डं दिया नत
 समाधि॥ नपाननखादा॥ जात्रा॥ कृगव्यवर्नक॥ कर्त्रकक्षय॥ ॥

CMS

5

10

15

20

25

15

10

64

गवयम्भज विद्य ॥ गता कुरु यत्तु पाडाश्रयः कुरु ॥ ६८ ॥ द्वाडा दिदिव
 तिष्ठाय ॥ ६९ ॥ तिष्ठन्नेयामने विधि ॥ ॥ द्वागु विमक्रय आरुसः सः
 मया चक्र गत नयक कर्षी कथाय ॥ ॥ ६९ ॥ तिष्ठन्नेयामने
 विधि ॥ धूमक नक विधि ॥ ॥ ॥

॥ ७० ॥ महादोय मर्ग कुरु कर्षी कथाय ॥ कर्षी दिद्यु न्यता विस्तार्य नदी
 ययु विविक्तयम् ॥ ॥ आकर्ष धूम निजाई साहा श्रीगुरुका वरी मर्ग यनय ह
 दान वा के

॥ ७० ॥ महादोय मर्ग कुरु कर्षी कथाय ॥ कर्षी दिद्यु न्यता विस्तार्य नदी
 ययु विविक्तयम् ॥ ॥ आकर्ष धूम निजाई साहा श्रीगुरुका वरी मर्ग यनय ह
 दान वा के

5

मया कयन

॥ ७१ ॥ नमः शिवाय ॥ मत्ता वृत्त वनक विधि माह ॥ सद्यन्त वन
 सः मर्ग ॥ द्वाडा दिदिव ॥ ॥ ७२ ॥ द्वागु विमक्रय आरुसः सः
 यः विममाधि ॥ ॥ ७३ ॥ द्वागु विमक्रय आरुसः सः
 धनमत्ता सामन ॥ ॥ ७४ ॥ द्वागु विमक्रय आरुसः सः
 दनकः मिथ्या राव ॥ ॥ ७५ ॥ द्वागु विमक्रय आरुसः सः
 धनमत्ता सामन ॥ ॥ ७६ ॥ द्वागु विमक्रय आरुसः सः
 दनकः मिथ्या राव ॥ ॥ ७७ ॥ द्वागु विमक्रय आरुसः सः
 धनमत्ता सामन ॥ ॥ ७८ ॥ द्वागु विमक्रय आरुसः सः

0

CMS

5

10

15

20

25

[illegible]

॥ निमोजनं यजमानाय मरुतुनाय केशिनं त्रिभुवनं गवामाद्य
 । नचिन्नं जितं चक्षुःश्रवणं ज्ञानं नामधेयं उद्गात्रं वरुणं
 नमस्कृत्य ॥ गवेन्द्रोद्गात्रोऽग्रं कृत्वा मत्स्यं रुद्रं वसुधं ॥ यक्षः
 यक्षानयुजा ॥ भगवन्तियं स्थानं दिदिवन्ति मरुताः ॥ सिद्धं
 नृयः स्थानं तस्य ॥ अस्मिन् विंशत्यक्षं श्रामिनादकृत्वा युजा ४ ॥
 ॐ ऋमृदावृषेभ्यो नमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥ श्रीवेङ्कटेश्वर ॥ कथं ॥

धनविधिमाह ॥ ७ ॥ शायः गुणमधुनः समाधिः कृष्णयूजाः कृष्णयूजाः धन
 मन्त्राजस्यस्यस्यः सत्त्विकमन्त्राः गुणमधुनः दनकः ॥ ८ ॥ शायः सत्त्विकमन्त्राः निरा
 जसः वज्रगान्धर्वः मन्त्रः दनयः ॥ कृष्णसत्त्विकमन्त्राः कृष्णयूजाः कृष्णयूजाः
 दधियः ॥ शीतलः शिवः शिवः शिवः ॥ कृष्णसत्त्विकमन्त्राः कृष्णयूजाः कृष्णयूजाः
 शायः शायः शायः ॥ मन्त्रः कृष्णयूजाः कृष्णयूजाः कृष्णयूजाः
 शायः दधियः शायः मन्त्रः शायः शायः शायः शायः शायः शायः

धनविधिमाह ॥ ७ ॥ शायः गुणमधुनः समाधिः कृष्णयूजाः कृष्णयूजाः धन
 मन्त्राजस्यस्यस्यः सत्त्विकमन्त्राः गुणमधुनः दनकः ॥ ८ ॥ शायः सत्त्विकमन्त्राः निरा
 जसः वज्रगान्धर्वः मन्त्रः दनयः ॥ कृष्णसत्त्विकमन्त्राः कृष्णयूजाः कृष्णयूजाः
 दधियः ॥ शीतलः शिवः शिवः शिवः ॥ कृष्णसत्त्विकमन्त्राः कृष्णयूजाः कृष्णयूजाः
 शायः शायः शायः ॥ मन्त्रः कृष्णयूजाः कृष्णयूजाः कृष्णयूजाः
 शायः दधियः शायः मन्त्रः शायः शायः शायः शायः शायः शायः

मन्त्राजस्यस्यस्यः

15

10

यके ॥ डं वजराख हैं सं ॥ धन जाय थ काडा ॥ दसा रतन काय ॥ यिखा
 वखना ॥ वना न दसा व के ॥ मन ॥ डं आ ॥ स वरत धारा क अनू जा गोया
 मि ॥ रुद्र मा ॥ निवा डं रुय ॥ यिखा प्रख स ॥ वपिन यि स ॥ इवा
 डं रुय ॥ थडा ॥ २ थ स रं गय ॥ कमी ॥ वरा ॥ स व क म ॥ गुनू या क
 नडा लाय ॥ धन सिद्ध स वय ॥ वजन थिय के ॥ डं स य कि थि क व ड ला
 ला ॥ स ग य न विय ॥ कुमा सि यू जा रुं या य ॥ खान रतन ॥ स ग य म त य ॥ द

5

क म यू जा ॥ आ सि वा द ॥ कुमा सि यू जा रुं य ॥ वि स रु न ॥ स म या व क
 ग रा व क ॥ क य व रु य ॥ ॥ रुं वि म य ला व न ॥ वि धि ॥ ॥ ॥ ॥
 रुं न म ॥ यो स ड ॥ स ला य ॥ ॥ प्र रु स व रा व रु मा द ॥ ॥ ग न व यो व य
 ने ॥ इ न हा य के ॥ न रा व के न ॥ द व ग रु सा ध न या डा वा व य ॥ स
 यो म रु न ॥ य व य गि ना र्थ ॥ थ य रु स रा य ॥ रु स क न ॥ सि ध मु ठ ॥ रु ग ॥ स
 ग व न ॥ म त ॥ न ग र त य रु न न ॥ स यो म रु न ॥ यो स ॥ ॥ गु न म रु न ॥ य रु ग रु

गो ध यो न के

२०
 श्रायः समाधियायः कृष्णपूजाः देवपूजाः धनमूलियानि शुभमलुन
 दनकैः भविसृजनयात्रकैः ये श्रुवाह विमः रुसखानचक्रानवतर्पः साव
 ना॥ **संकाशं स** कृतिचखरावसकाशुसमाचूटं वज्रसूर्यविः
 रावा॥ धयनिः राजनः॥ धन॥ पृथ्व्यागः **इं दिवा कय** प्रावत
 यमवविद्यनत्सात्रयहं स्वाहा॥ मधुनकयकवाय॥ **इं प्रादि** ख्यायवजः
 पृथ्व्यागिरुस्वाहा॥ **मधु**॥ **इं** मायायवजपृथ्व्यागिरुस्वाहा॥ **पृथ्व्या**॥ **इं**

ॐ गं नायन ऊयू र्थयुगिच्छ साहा ॥ दक्षि ॥ डं वक्षयव ऊयू र्थयुगिच्छ सा
हा ॥ दक्षि ॥ डं वक्षयव ऊयू र्थयुगिच्छ साहा ॥ डं ॥ डं वक्षयव ऊयू र्थयुगिच्छ सा
हा ॥ अ ॥ डं गनिधनायव ऊयू र्थयुगिच्छ साहा ॥
न ॥ डं नाद्वयव ऊयू र्थयुगिच्छ साहा ॥ वाय ॥ डं कटनव ऊयू र्थयुगिच्छ साहा ॥
डं ॥ डं कटनव ऊयू र्थयुगिच्छ साहा ॥ डं ॥ डं कटनव ऊयू र्थयुगिच्छ साहा ॥ डं ॥ डं कटनव ऊयू र्थयुगिच्छ साहा ॥
नियन ऊयू र्थयुगिच्छ साहा ॥ डं मगसिनायव ऊयू र्थयुगिच्छ साहा ॥ डं ॥ डं कटनव ऊयू र्थयुगिच्छ साहा ॥ डं ॥ डं कटनव ऊयू र्थयुगिच्छ साहा ॥

यवज्जयुषीयमिच्छुस्वाहा॥६॥यूनवयुवज्जयुषीयमिच्छुस्वाहा॥६॥युष्ययव
 जयुषीयमिच्छुस्वाहा॥६॥असन्नवायवज्जयुषीयमिच्छुस्वाहा॥**यवज्जयुषी**
नक्षत्रानिपुष्या **मि॥६॥**मद्यायवज्जयुषीयमिच्छुस्वाहा॥६॥युर्वहग
 मयवज्जयुषीयमिच्छुस्वाहा॥६॥हस्तयवज्जयुषीयमिच्छुस्वाहा॥६॥हस्तयवज्जयुषीयमिच्छु
 स्वाहा॥६॥हस्तयवज्जयुषीयमिच्छुस्वाहा॥६॥त्रिणारायवज्जयुषीयमिच्छुस्वा
 हा॥६॥स्वामिथयवज्जयुषीयमिच्छुस्वाहा॥६॥विमालयवज्जयुषीयमिच्छु

स्वाहा॥**यतानिनक्षत्रानिपुष्या** **मि॥६॥**अनूनायवज्जयुषी
 यमिच्छुस्वाहा॥६॥हस्तयवज्जयुषीयमिच्छुस्वाहा॥६॥मूनायवज्जयुषीय
 मिच्छुस्वाहा॥६॥वृषायवज्जयुषीयमिच्छुस्वाहा॥६॥दरुनायवज्जयुषीय
 यवज्जयुषीयमिच्छुस्वाहा॥६॥मूलायवज्जयुषीयमिच्छुस्वाहा॥६॥मूलायवज्जयुषीय
 मिच्छुस्वाहा॥६॥मूलायवज्जयुषीयमिच्छुस्वाहा॥६॥मूलायवज्जयुषीयमिच्छुस्वाहा॥६॥
यतानिनक्षत्रानिपुष्या **मि॥६॥**अनूनायवज्जयुषीयमिच्छुस्वाहा॥६॥मूनायवज्जयुषीय
मि॥६॥अनूनायवज्जयुषीयमिच्छुस्वाहा॥६॥मूनायवज्जयुषीयमिच्छुस्वाहा॥६॥मूनायवज्जयुषीय

15

10

5

0

२

४५३

ॐ स्वाहा ॥ ॐ य द्यो यो र से द व ज य र्थ य निरु स्वाहा ॥ ॐ उ म र द व ज य
र्य य निरु स्वाहा ॥ ॐ अ व नि स व ज य र्थ य निरु स्वाहा ॥ ॐ अ स नि स व ज य
र्य य निरु स्वाहा ॥ ॐ र नू न य व ज य र्थ य निरु स्वाहा ॥ ॐ र नू न य
व स क ड क नः ॥ ॐ अ ति ना ॥ ॐ ॐ दाय स्वाहा ॥ ॐ य मा य
स्वाहा ॥ ॐ द रि ॥ ॐ व नू दाय स्वाहा ॥ ॐ द रि ॥ ॐ क व नय स्वाहा ॥ ॐ ॐ ॥ ॐ
आ ग्रा स्वाहा ॥ ॐ अ ग ॥ ॐ नै म ह्य स्वाहा ॥ ॐ वा य ॥ ॐ ॐ सा त्म य स्वाहा ॥ ॐ ॐ
ॐ य नै स्वाहा ॥

य के प हा स य ज्ञा ॥ ॐ न अ द य अ न क ॥ ॐ स र व स ड ड ना य अ रू नू न य
अ द म रु ॥ ॐ नै मा रु ग व ह्य यै का स्य य य गाय आ दि य ग रु स रू ना य
अ नू द म दि ना यः क क ड न य अ न ग व धू क क गु म स द मा
यः न क वा सा यः न क यू दायः न क र क्षि यः य क्षा य वी ना म
क व ग अ थ स मा नू दायः द व दान वः क रुं लु ॥ ॐ कि रि ॥ ॐ न न न सः
दि ना यः अ व न य र ग र्वाः स नू यानि ही ना यः य थ ॐ ॐ द ग र म द न

CMS

5

10

15

20

25

॥ गुत्रि, थसमादिका, लाकप्रया, यात्रयाइ नग, नृयत्र, जहायत्र दशा ॥
 २४ । न, रुकयवस, गमनायनद नयायावर्ग, मनुथ ॥ डंकलकलेनो ॥ ६६ ॥
 । लाहा ॥ थमरु न, आकत, दाहाखा, नयाडा, अधिका नया दावर्ग ॥
 । थगुत्रि, जवस नयक, थकादिन ॥ ॥ थमरु कया नयाडा, क ॥
 । सयाहुजान, थयवर्ग ॥ ॥ ३ ॥ खनयाजा गुत्रिध, त्रिनी, यायाव, नृ।
 । यत्र, जहायत्र, न ॥ मरु ॥ थ डंकलकलेनो, गूसजि हूँ, वजकाय, गुमर।

। कतर मलाकाल, मलायाला थवी, हूँ हूँ हूँ २ लाहा ॥ ॥ थमरु याया।
 । ला, दाहाखा, न, नयाडा, अधिका नया दाडाह ॥ खनया, थसमादिकला।
 । कनया, यात्रसर्ग यक, थकादिन ॥ सस्त्रियाक वदय, थसमातय।
 । क ॥ थसमासमा नहुहा नयक ॥ लाडाता, खंका नज, विधव।
 । कनय, गिवादा नक, हें विराया ॥ ॥ धूयनिवाजन, वत्रिपान, थ।
 । यत्रयर्ग ॥ थमरु हाथ जयवर्ग, हाथ वृजा ॥ याविय, खरुयात्रक, थक

१ छिनमसदृशक, वलिसकायक, वनिधनसवातक प्रथम, सिद्धा
२ कनं ॥ ॥ सिमिनास वाकूठकि, तथाडा, काठ, यकन, अइवान, तथा
३ वः गोवक, भाऊ यक, मासकत्रक, ॥ वड, तात्रा मरुहमाय, क
४ सनयनहायक, सिधवनविद्यवज्जयाय, दिमित्त, जजम, स्थान
५ मात्र, सुकलायक, केठाभता, डा, विडा, थसमासनंकनं ॥ ॥
६ मरु ॥ डंतम४ सम रुद्रानां डंसदापथं शिवाशीय, चक्र, बलिम ॥

[illegible]

15

10

॥ इति प्रतिक्रिया ॥ सूत्राचार्यन. असमाधिक. कमिहानपूजाया
 ॥ य. ह. नडाकाय ॥ धिहान. ॥ ॥ माहानानअशादि. ॥ ॥ यनय. शिवा
 ॥ दान. धायनी. ॥ कत्यकयसहसकं. ॥ ॥ ककयं कुमल. सदास
 ॥ दामसर्वकार्यथि. ॥ विष्णोयसात्र. ॥ ॥ नरुकुदेवनासक्त. ॥ कुरु
 ॥ शिऊनवायव. ॥ ॥ नवजपृथङ्ग. दवात्रय. समस्तस्य. आय. तं ऊ. वा
 ॥ य. धिधिवि. आकास. धन. पय. रत. आरमा. वरुत्रपमानं. ॥ ॥

5

॥ यावभत्र. शिवा. दवा. जावभेनै. गंम. महितत्र. ॥ ॥ गुमत्रपत्रव.
 ॥ तस. वजसत्य. नध. गतत्वं. धिनीयाद. विष्णोतात्रं. धिधिविस. गरा.
 ॥ खवरुत्रयवागा. ॥ ॥ ॥ यडाकं. गरातयाव. लावत्वं. धवागा.
 ॥ विजयितव. ॥ ॥ ॥ आकास. वधु. सय. आवागमन. दिन. वाणि
 ॥ दयक. विष्णोतात्रं. लावत्वं. धवागा. विष्णोय. धिनी. ऊडा. मान. या. गुरु.
 ॥ मंगन. ॥ ॥ ॥ मंगुधिवक. खानन. पृथु. याय. मलुन

मै तस्य सिद्धं नृय अका नमूवयित्वादि॥ धानि कु नयति थ ॥

116 22 11

॥ (५) मा क मा रु व म व रु न कं लु म अ न हा रु नि ॥

11

41

त्यक्तयस्तवद्वभग ॥

॥ स्वानुद्भूतस्य वक्ष्यमाणं कार्यं नान्यथा न युज्यते ॥

पञ्चकृतिकृतिकाका

समयविस्तार

॥ भूयस्तवत्वा ॥ कथमत्रवत्वा ॥

॥ हायः नैत्रा रुदाः शरुः श्रुतिनका ॥ यक्षः यक्षः यक्षः यक्षः यक्षः यक्षः यक्षः यक्षः यक्षः यक्षः ॥ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ तात अकृतं संप्रमदित्य

सिद्धनम्रयः पञ्चशतत्रयज्ञा अकारमुख्यियादिर्घं वादनं कुति
तपत ॥ ॥ शृणुः पुतायः शेषजगत्वावदा ॥ ॥ विधिश्च न ॥ ॥

१५-मा कथा सुव

मवत्तलकुलुंमत्वा प्रहाइतिभिश्चिनिषन

वाम्पुङ्गवः ॥ का ।

जाकनवपुष्टमगुलसगगुक्रनूयायकाशिमस

तथैव तस्मिन्मात्रे भा-रु-वि-न-य-नि-व-ह-क-ता-क-जा-य-स-रू-य-वि-न-य-सि-क-व

सुविश्विनामं सद्यः कृया कृयात्रिमासिकं रुद्रस्य यमं वा भविष्य
 यमिदं कृमलुनृभू ॥ **ॐ** वायकाश्रुयसाहा ॥ ॥ **ॐ** आश्रुमन
 स्वाहा ॥ **ॐ** मरुतसावित्राहृतिविद्यया ॥ ॥

(सद्यः कृया ॥ कर्मसं सद्यः कर्मकथनयागसा कर्मासिपूजा कर्मसं सद्यः कर्म
 धिं पूजा धूनडाडा दत्तपूजा ॥ **ॐ** नत्रियिनिभायात्रयनित्रभासंदयस्वसि
 श्रीमंतय ॥ ॥ **ॐ** नमस्तु नदनक धूनडाडा सिद्धाधियासन
ॐ नत्रिमिजन कृतमिसाया दकके प्रया डाहायाकके सदा
 धयन सज्याकके कर्मसजवन वागासदाभं सदाक कयात्रक ऊडा त्वडा
 दया सिडान वसावान सिद्धहाय रुतुनतु कर्त सदात्रस साकयाय कर्म

सद्यः कृया

15

10

वाप्ययुवक धूनकाश संवत्तविय वरुजाय भ कृपया प्रादं जाय
 मिजकयाग मधिकनजी जाय मिजकन सोरया जवम मधिकायाज द
 100 गुद थजकडा गुनयागविय धूमिधूनकाश भहननय खान
 नन यिप्रिमावा सिधुर्म कसकं यवजाय थंयिना दडा जापय
 कशाय आसिवा वि सजन कुमारिय जा ॥ ॥ ॐ हिक सवधन विधिसमा
 यत ॥ ॥

ॐ
 हिक
 सव
 धन
 वि
 धि
 समा

5

ॐ नमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥ नमो जातकर्म कथ्योत् ॥ अथ शत्रुसाधय ॥ नमो निशत्रु
 धर्म भक्तो वरुसत्त रं काज वा नावायोः यथोक्ते कुमरा अथ गुरुं वरुसाधु मधुन
 निथाय ॥ अथ मत्ततसा गावम ॥ ॥ गगनोत्तम सर्वतथा गगनमं गुरुनय सवैवा
 धिसत्त संगुद नय मं लुत्तये य निवृत्त मधुना धिय निमात्रा कयत
 कता यथादिय जाथन स्नानया सज हाज के ॥ ॥ ॐ आः सर्वत
 थागत सात नि ग विना गल नमि न न मा मि र ग व रं ऊ रं वं हं ॥ यु नि क क स
 मीज निना थ हाः समय सर्व ॥ २ ॥ थन यथ धु र्धय ॥ र ग व न म क म द

15

10

103

ऋविद्यानां विद्यानां ज्ञानमात्मनः ॥ कर्तुमिच्छामि नानाथयुक्तिस्तु कर्तुमात्मनः ॥
 यथा नाम नृकं याथ, यथा कंयुतिस्तु यावत्तमेतत्कथमस्य गव्यं यथा दं कर्तुमिच्छामि
 यथा हि सर्वेषु यथा ॥ सुविदं सर्वं यतिष्ठिता ॥ माया देव्या यथा कर्तुं न ददति
 कर्तुं न ददति ॥ अथ ॥ सुमहर्षिनाथ, हृत्वा यथा दिका ॥ माया देव्या यथा कर्तुं न ददति
 सार्थं यथा धिचिरुप ॥ कथं ॥ समन्ताद्दर्शनं कुर्वन्नाम गव्यं कर्तुं न ददति ॥
 लब्धं यथा धिसत्त्वा यथा यथा त्यागं कुर्वन्नाम ॥ ददतां तां कथां सा यथा तां सार्थं यथा धिमाः
 श्रुताः ॥ सा सतां श्रुतां सत्त्वा, यथा विद्वज्जवत्तु ॥ अमुं को हं महाव ॥ जी, अमु

म

5

कदवतायुतिस्तु मि, ऊरात्तु यथा यथा यथा जगत्तु अन्तःकथं मया दाय, सार्थं यथा
 कुमद्युत्तं सर्वं यथा यतिष्ठिता ॥ कर्तुमिच्छामि ॥ अथ मम हर्षं जगत्तु ॥
 वजाद्गन्धं याथा ॥ यथा यथा यथा ॥ कर्तुमिच्छामि ॥ अथ मम हर्षं जगत्तु ॥
 राजय ॥ यथा यथा यथा ॥ कर्तुमिच्छामि ॥ अथ मम हर्षं जगत्तु ॥
 तजतस्य, वृद्धस्य ॥ यथा यथा यथा ॥ कर्तुमिच्छामि ॥ अथ मम हर्षं जगत्तु ॥
 कस्य, तजतस्य ॥ यथा यथा यथा ॥ कर्तुमिच्छामि ॥ अथ मम हर्षं जगत्तु ॥
 २ हं स्यात् ॥ हर्षं स्यात् ॥ यथा यथा यथा ॥ कर्तुमिच्छामि ॥ अथ मम हर्षं जगत्तु ॥

0

CMS

5

10

15

20

25

15

10

705 वसावा दयाय दत्तं गमकसिंहनदी कर्ता गायत्री विनिर्मुक्ता । नमिभिः सर्व
 दिग्भ्यः कथा कुपुर्वी देव्यां नमः सत्वाद् दत्तं नागायस्मि युवराये वरुणी विनाया
 ॐ ह्रीं दीहि दानं ॥ ॥ धनवत्संगतद्वज्रस्य धनतया वयं समनयाय ॥ ॐ
 आः सर्वतथागतं सधुषासनस्वाहा ॥ इड ॥ ॐ आः सर्वतथागतं जि
 कामतथा न स्वाहा ॥ यं गतात्र ॥ ॐ तिज्ञाकमी ॥ ॥ धनसावना ॥
 स्तुतिद्विज्ञादोदवतानां तामाकर्तुं विनाया ॥ पुनर्नागायस्व हृदयानां कर्तुं म
 नुनिश्चायं दनता हृदयं युवराये न धेवस्तु नमो सत्तज्जसादिर्क कला ॥ आ ॥

5

पा नोनाजेन ॥ यक्रामतादिनयं ॥ ५ ॥ वै आं जिं खं हं ॥ नमाकर्तुं क
 न जावादासमानं दय ॐ सर्वतथागतं कायविना धनं स्वाहा ॥ यक्रवत्
 केन तस्यैता नयाय ॥ यः सत्वाजलवत्तधर्मसकम्पवत्तमूडाङ्गलानसहित
 यवियस्य यस्या ॥ वं यावत्तस्य रुतवः ॥ वाविनाभकस्य तमङ्गलरुतव
 दुग्मकिं कर्तुं नक ॥ ॥ इमं कनकेने ॥ ॐ वज्रमत्त आः ॥ धनसम
 नावत्तननवक ॥ ॐ आः तिसकस्य स्वाहा ॥ ॐ आः नमूककवत्तनामनथा
 गतत्वं कर्तुं वस्वा ॥ दवयान्मवत्तमवत्तजसथियं कं दवयामर्तुं सजपः

[illegible]

गम उदीश आ कां ग या द व र्ण क सा न द या व य रि मा स इ वि का रा ज र्थ सा ध य ॥
 प्राप्ति ॥ ध न स्ना न या य ॥ डं त मः स म न व द्वा नी र्वा धि नि वि षु क्ता नी स र्व
 वि द्वा न न र्वा धि नि वि षु क्ता नी स र्व
 य ॥ ग व क्त द व र्ण ॥
 धि स्ना न या य ॥ डं
 गि न का ॥ दा क का य ॥ ध न क म क न अ मा य सि धि न र्थ आ ला सा र्व क मि क मः
 कु द न का वि य ॥ हा ० यू जा या र्थ द य क व मु न ज्ञा रा य ॥ स्वा न न न ॥ ॐ वि यु नि म

15

0

5

0

सिद्धयुगाविधिः ७ ॥ यथिवायुजस ॥ मलयतिमा ॥ रावना ॥ वामदकि
 लकत्रयोशुद्धसूर्ययत्रिजनजवरुटिनिध्यात्वाडंआः ॥ नरुखयकीनाडी
 १०८ यद्वैठजाधोवासा विरुधीः कानातिरवाग्जमकनाकार्जयानिनर्गविधि
 ल्य ॥ जाय ॥ डं वज सत्वहं पुनः डं वजयकहं ॥ मसियारावना ॥ मसि
 के पुस्तकनामि कं वजमु यनिधमनसनामृतनूयाविराया ॥ युजाम
 उ ॥ डं वजधर्मडीः स्वाहा ॥ ॥ वाककलावना ॥ राखमीययजमायवजं वि
 रित्य ॥ जाय ॥ डं धीः शुक्तिमतिविजयसुवाहनदलायहात्रिगीडीः स्वाहा ॥

हस्तयुगा मलयति मसिमलाजाय वलिकुवातविस्ती वात्रवने पूतवलिस
 तयाव वावकत्रयय ॥ यथिवायया ॥ ॥ ॥ सुगुवावन ॥ गुनूव जजमान
 व रावना ॥ तना आत्मानं वजसत्वनृथ डरुत्रमाधकथ कमावजीनृथ विरित्य
 ॥ ॥ धनसुताधिस न ॥ डं वजध के हं डं वजयकहं दिवदं कोहूमिजः
 ०० ल्यरुत्रमाधकस वरुदयान्यसुतमठकाजासी आत्मनाद कित्येचकथ
 : से चैयंदम सोनिवाय ॥ डं वजद्विमिडिमी कयडं अमी ॥ आः अः अः स्वाहा ॥
 सुवदं ॥ ॥ डं अन्धान्या नृगता सर्वधर्माः ॥ डं आः ॥ ॥ वाजासुतस्यरावना ॥ तनाहं

CMS

5

10

15

20

25

15

10

सिधजगयक दगुसमय मलु थिजभ किटन विमरुन समाधि यत्रिकम
 नं घडा दवठु लादि ॥ ॥ सिधयति जससिहक स्व सिमनय गुजमदन
 १२० दनक यसेगठे विद्य जक्रम धुलवायक मिना जाका मीयनका ॥
 नडाडा जक्रमधु नवायक यययकाजडा वरुनरु लादि थन
 नक्रमधुलदाका जय थनअययाय धुनडाडा थडा २ थसंन
 य थका नीनक्रम मलुलथिस काडा स्नान दाका जवायक ॥ ॥
 थनअययना ॥ बोधि वरुन वृद्धाती यथादरुमहा मरुमसायिता

5

नाथय ववजादकादिम ॥ ॥ हनाथदगुन बाहोधि वरु वृद्ध यतिरुमथ
 अविमकसिन अर्थजियतिन काया ययायन स्व वरु आदि विम विका
 रुने ॥ ॥ ताव ना ॥ नदन मरु ठीक मयु खेलाति ना नक्रमरु
 दनथमगावि बादविम मयुम मिथारिथकार्थ ॥ ॥ वृ
 छातामरिषक मु ऊमगाभाय वजिना युभा कला रुथादरु
 नथदरु मस्यदि ॥ ॥ हनाथ वृद्ध यतिरु अविमक विज मसा
 नडका जयाययात गुला कल मथ विज अर्थ विका रुने ॥ ॥

15

10

5

0

१२ कथं गच्छेत्तु कथं तय ॥ रावत ॥ न तथा गते ॥ घट्टे स तापसे ॥ महां जा
 गत दवि रुय वे जा जत द्या जना न नि वे ग व रु मा री स ल्य न ॥ दैवः
 १२१ दवि य प्र म थ न यु व सि र्गि षि ॥ अ रि ती गु ल्य ता न न न व द व
 ऊ जा तः दि रु ऊ जा तै ॥ म पु र्वा का र्य ॥ स रा र्ज गी स व न न व
 स न स त्वा रि नै म रि रि वं य ॥ पु न रु म थ दि म र्कि रि ॥ य प्राः
 नि रु ल्य ग ग र मा पू र्यो लि र्ग ॥ आ व ता दि वि शा स दि र्ग ॥ रु गु ध रु य

ता का य स का दि न गी त नृ ल्य पु र्वा कू र्मा दि रु र्कि रि ॥ क ल की भ न
 रा व र्जि र्ग वा धि वि लो म र्ग पु र्वा गी त के नै स र्ग सि र्ग य प्रा नि गृ ह म
 रि वि र्ग मा न या गी ती ग र गी य मा न म रु ल गी र्ग ॥ अ रि थ
 क वि य ॥ ऊ ल म रु ल म क न स त्वा रु दि लि र्ग स म वा द्यो म क स
 व न धं मी स व क जा धि य स नि ग य स त्वा म रु न क स म हा म य स त्म
 रु न रु व रु य न मा रि थ के ॥ ॥ या न मा न ग दि र्ग कं त य ॥ रा व त

कथं गच्छेत्तु

15

10

5

0

१२ हुं ऊं का लां धि छिं व ऊं जा ऋ र्यं ह्रीं नमो नित नमो नमो नमो किं
 कुं न धू वा मय क् डं म हा म ष व ऊं म वा रि थ क न त्वा म रि थि य
 मि सर्व त थ ग ता धि य ति ले न द दौ र व ॥ अ वि म क
 १२२ विय थ गु नि ग म धा न ॥ ॥ व रं ग त ह व न स व रं व र ह
 य ॥ हुं अ रि थ कं म हा व र्जं ने धा रु कं न म स्कु रं द दामि सर्व वृ धा नां नि
 गु का न य स रं व ॥ ॥ थ अ वि म क र य ग थि ह व ऊं धा थि ह स्व रं

वि
पु
त्र
म
क

नै मे से म थ या ना न न म स्का न या ह तथा स्व ना ह द नै ड ल्य ति रं त डि न
 रु य नि रु विया ॥ हुं आ व ऊं द का रि थि य स न त रं म र्द ॥ ॥ य क
 य हा न य जा ॥ ॥ ॥ ति ड द का रि थ क ॥ ॥ अ थ य
 धा ॥ वा धि व र्जं व ह या न ग थ ति न अ र्धां ज य नि रु न म्भ या
 त क या न मू क ना रि थि य मो नै प्र क वि रु न ॥ रा व ना गि थि अ न रु
 स र व नू पि न स्ना न स ल्व किं कु रं न रु रु त थ ग त क र्म न रि थि य

ह
उ
द
का
रि
थ

CMS

5

10

15

20

25

14 अमात नृपवजादिरुपयनियमानं मक्षसंतीति वयसः ॥ मकूटन
 पूयकः ॥ ॥ वृद्धतसर्वे वृद्धातीति धातु कं न मस्करं युष्माकं यजनाथय
 मकूटयश्च कृता रुते ॥ धर्ममस्तु न धर्मगतयो नैति युववर्तनं नम
 123 स्कायवाहक्या ॥ आतृष्टिस्तनयजायाचकं अथ नमकूटकादू
 तं पश्चकं न जातुं ॥ ॥ रुजकः ॥ वृद्धवाहसजिभूति विचरुं ॥ ॥
 वज्रवर्तीति अतिविश्वं ॥ ॥ कर्मवर्तीति अतिविश्वं ॥ ॥ नतवर्तीति

अतिविश्वं ॥ ॥ कर्मवर्तीति अतिविश्वं ॥ ॥ कर्मवर्तीति अतिविश्वं
 के अ॥ ॥ ॥ सर्ववर्तीति अतिविश्वं ॥ ॥ कर्मवर्तीति अतिविश्वं
 वज्रवर्तीति ॥ ॥ ॥ सर्ववर्तीति अतिविश्वं ॥ ॥ कर्मवर्तीति अतिविश्वं
 कर्मवर्तीति ॥ ॥ ॥ सर्ववर्तीति अतिविश्वं ॥ ॥ कर्मवर्तीति अतिविश्वं
 कर्मवर्तीति ॥ ॥ ॥ सर्ववर्तीति अतिविश्वं ॥ ॥ कर्मवर्तीति अतिविश्वं
 कर्मवर्तीति ॥ ॥ ॥ सर्ववर्तीति अतिविश्वं ॥ ॥ कर्मवर्तीति अतिविश्वं
 कर्मवर्तीति ॥ ॥ ॥ सर्ववर्तीति अतिविश्वं ॥ ॥ कर्मवर्तीति अतिविश्वं

१८ थं जिघत्सि त्रकायायया क तजारी थक विदुत ॥ ॥ रावना ॥ मिथी को
 य मया प्रमिता लामर्क स्ताने सत्वा रिने ॥ त को ऊ ता मिता मर्क विरिते
 १२५ ॥ ॥ वरु विद्य ॥ क ० कया न नु मने थिय क ॥ अ मा रि थि क
 त्रम सि वृ ध त ज ॥ रि थ क थ स सु वृ ध र य क या त अ मा व ड का व
 ॥ ड व ज रि थ क स स क ल म र्द ॥ स म र्द त व न हा य ॥ ड स र्द म र्द न क व र्द ॥
 आ का ल क ल क न म र्द वा म हा क ल य द या र्क स म स सि य क ता व र्द थ का

आ का र्ज क ल ड ल रि क या व या द म हा अ क न य द ना ना ॥ ०० रि व ज रि थ
 क ॥ ॥ अ अ व ना ॥ वा धि व र्ज न वृ धा ना र्थ थ द र्द म हा म र्द म मा थि
 ता न म थ य स व जा द दा रि म ॥ वा धि व र्ज न वृ धा ना र्थ थ द र्द म
 हा म र्द म मा थि ता न म थ य स व जा द दा रि म ॥ वा धि व र्ज न वृ धा ना
 र्थ थ द र्द म र्द म र्द वि न अ थं जि घ ति स य वृ थ रि थ क वि द न ॥ रा व ना
 ॥ मि र्थ र्थ का ल ज त व ना य र्थ अ मा य सि धि स्त न सत्वा रि ने य थ वा मा य

क ता ना रि थ
 क

10 सिद्धिविनायकः ॥ अशिष्टकं त्यादि ॥ ~~उ~~ तज्जाधोयगित्स्वामिशिष्यमि
 तिथवजसमयत्वेसा वज्रय ६८ अ० ॥ ॥ गृहिभासिमयारगन्मायसं
 तिहिभासव ४॥ ॥ यत्तु विय ॥ सखलनहाय ॥ ~~उ~~ तज्जाधोयगित्स्वामिशि
 12 अश्वसजतस्वः मरुं ॥ ॥ अनयसंभूयधमयः सखावल
 हनेषुव नवधि नववृक्षत्वं नसर्व नवाजवर्क ॥ धर्मसं डयतिम
 शव अमोय ६८ मियमड वृद्धिमय वृक्षस्व तावमत्वं सर्वमत्वं स्वाक

मत्वं ॥ निवृत्तनसत्यगाकनूष्म रित्रेहना दयाधिय ॥ निवृत्तयार्यम
 जित आकाशकार्यमजिडा आनडयतिरुज अमोय ६८ ॥ ॥ यत्तु
 धमचक्रे आकाश कं यत्तु ४॥ ॥ यस्यासर्ववृक्षानी यत्तु धावा
 नृगसुता वया यिहिसदाधया वाधिनग्नाजि निमता ॥ यत्तु
 ६८ धयागदत सकयतथागत मनहवशडा थथिय ६८ वृक्षलस्यन स
 दीधननयित नथागतयामन ॥ ॥ आर्यगनयावर्क ॥ मूडाहिमम

१० १२० १६
 ॥ तत्तां नृका सा राव न क व लु यु क लि ता ॥ गि क न दि य मा त्मा तं तु ॥
 ॥ अ ठ कं य रा स्य त्र वि ता य ॥ त न ग ए न य स ल्व स हा दी र्पं यु दि र्पं वि ॥
 ॥ रि लु यं त ॥ ॥ ॥ धू य नि ना ज न आ या न य ना य मु ति य व ॥ ॥
 ॥ ॥ हि म क दि य रा व म ॥ ॥ ॥ न नु वि छ स व लु दि क न अ र्व स म्भ ॥
 ॥ व द य रु र्ख ता व ना रु वा स र्व वा पि षा का स का न छ दा मं य प्र कं रु कं ॥
 ॥ ना स न स न ये ष म क ल्य कि र्तिं स र्व कृ षा ना फ ॥ य हा नि र्गं स म य स ल्व वी ला

(महापर्वण)
 ॥

॥ त म रु स म्भान स ल्व स र्व द ज कि न ग नी ग न तु रा य ॥ धू य नि ना
 ॥ ज न लो हा अ गि न ना ॥ ॥ ॥ न म ४ स र्व वृ क वा धि षा वा नि आ ॥ य न रु
 ॥ ना व नि स हा ॥ ॥ म रु रु स र्गं ज ध वा आ या य ना य मु ति ॥ ॥
 ॥ य व ॥ ॥ ॥ ॥ हि म क ल्य वं म ॥ ॥ रु क रा य म ॥ ॥ ॥ त थ र्म का
 ॥ न ज मि रुं अ का न र्वं कं अ अ ल्य त नि र्गं कं का न ज न ल क ल र्गं म का न ज
 ॥ म ल य न म रा स का ना या रा का न र्गं ग ल्व व ॥ य का न ज य क आ का न ज

(कृष्णार्णव)
 ॥
 (अनंतव)
 ॥

विश्ववर्जं वृषलोद्धंकात्रवज्रयाकात्रजसत्वरुकात्रवसाधाद्यकिर्णं ॥
 समयसत्वरिगाय ॥ तत्समस्तानसत्वरुकात्रकिर्णसत्तानासमयसत्वरः
 विविर्णं ॥ ॥ पत्रीकमर्तयुज्य ॥ ७॥ आ४ वज्रध्वजवर्णजयाञ्ज
 सखादा ॥ यं ध ॥ ॥ सायियादि ॥ ॥ ७॥ तन्मृदि किर्णनना समः
 यत्रिनामनयन यमाकात्रयाकात्रवनासवनागमयसत्वरुका
 नयनाकात्रवर्णकात्रविविर्णयर्ण ॥ ॥ ७॥ आ४ वज्रयमाकात्रवर्णरुका
 दा ॥ ७॥ ययर्धवा आयायनाय मुक्ति साहस्रगि यियादि ॥ ॥ यमा

परावर्तम ॥

पोषयनासनका मदनमूर्ध्नि मलारोत्रवा मरुमा चोचोचमृ मना
 धू रानगुजवटका साकयासा४ रुनिद्रा यकायिभश्म यिधिगहोसक
 ना मानसा४ रु याला यारो चो यारुका जत्रवत्रमहिता यान
 मर्तययीवर्ण ॥ ॥ ७॥ नमशा४ रुगुहमाहकार्य हिमत्रजतनिः
 कासा वियनिधम मूद्रा विमखजलजशकी जलवृक्षमयामा रुहशम
 कूटशरणा सर्वत्रासयदन्ति गुरुरातमाता सर्वदात्वा नमाभि ॥ ॥ गह

सिद्धिप्राप्त ॥

धून हाडा, द्रव्या के स्त्रान यहा नतया वः सा जना दध्या ॥ ६ ॥ स्वराव
 गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥ गुह्यो गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥ ॥
 १३० रागवान् श्रीमन् गुह्यो गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥ गुह्यो गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥
 गुह्यो गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥ गुह्यो गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥
 गुह्यो गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥ गुह्यो गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥
 गुह्यो गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥ गुह्यो गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥

मो. गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥ गुह्यो गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥
 गुह्यो गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥ गुह्यो गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥
 गुह्यो गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥ गुह्यो गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥
 गुह्यो गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥ गुह्यो गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥
 गुह्यो गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥ गुह्यो गुह्यो सवधमो स्वराव गुह्य ॥

51

10

॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥

त्रिकर्मतयुजा, धनकाडा, मधुनधियुके, किननके आसिवात, सर्वत
 यक, त्रियुजा, दक विथक, दमुसमसकायक, इनका मड ॥ यकी यरु
 १३२ हातयुजा, विसजन, ॥ धुनिधुमं सि अमि सवीठगु निसकर्णा
 गथासकाय, यक, गधे, तस्वात्रिक, सुगधर्ज हवनय, धुनिधुन
 काडा, यो त्रिहाडा, खायाडो नके ॥ ॥ सोडू केडू के। सत्र, काडू केडू, कसडू के
 कसमि सीने मजजा तथधुनकाडा, मधुनधियुके, किनने, या ० समायन आ
 सिवात, दगुसकसकाय, विसजन, मधुन, कत्रस, अमि ग्व यो विसजन, अमि सजा

सिजाडो योनास
 योनास योनास

5

॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
 ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
 ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
 ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
 ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
 ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
 ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
 ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
 ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
 ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥

गुनेहजया

0

CMS

5

10

15

20

25

15

10

5

0

21

123

श्वधनः सिधुतयः नखवनिविमज्जु निममाधिः कुंभयुजा ॥ दंडाय
 जा ॥ मधुसाधिवासनः ॥ ॥ धनमधुनलानना ॥ ततः ४ मधुन
 मधुः साकमैम निः पूर्ववजयानि ॥ दक्षिणरथ्या श्रीष ॥ य
 १२३ दिमः गीतवज्रक वलिनिः ॥ उतत्र विजया श्रीष ॥ अग्रः तजा
 नासिः नेमत्या विधिमक ॥ वायु श्रीः वि कात्रिनिः ॥ गहनमिना गुय
 तवठु दानः वजा कभादिः कानेषु धूयादिदवगाय विदिता ॥ अगत

२ विराद्या ॥ वाद्यादिकम् निजाजं यत्रिकमय

समयसत्त्व सतसत्त्व आवाहनं ॥ कुतकमूडामरु नयूजामुति ॥ यूर्य
 यास ॥ डंभाकमूनय हं स्वाहा ॥ डं वजयानय हं स्वाहा ॥ डं वजडि
 य हं स्वाहा ॥ म ॥ डं संवयकुवलिने हं स्वाहा ॥ डं विजयादि
 य हं स्वाहा ॥ डं त जायासिन हं स्वाहा ॥ डं वज विधिमिन हं स्वा
 हा ॥ डं वज विक्रित हं हट्ट स्वाहा ॥ डं मिना गुय हं हट्ट स्वाहा ॥ ॥
 डं वज वास्य हं ॥ डं वज मानेगु ॥ डं वज गीतजी ॥ डं वज नृत्यश्रू ॥ डं मे

जयन्ते ॥ २

CMS

5

10

15

20

25

15

10

5

0

22

134

विदुननायसाहा॥डंअभाद्यदगिनहं॥डंसर्वयायविधधनहं॥डं
 सर्वस्वकरुमानियातमर्तेहं॥डंगीधदसिनहं॥डंसर्नगमहं॥डंग
 गसगंजहं॥डं
 रूहं॥डंरुदया
 वधूधर्ग॥डंवजावताकिर्कहं॥डंवजगल्लिअ॥डंवजाकमजहं॥डं
 वजयासकी॥डंवजहोठव॥डंवजावममहा॥यकेयलानयूजा॥ ॥

अनावाधेनकापयाकाअनय॥कापकृत्तकयाय॥

नासा॥द्यल्लुमुनि॥धनअ॥सुताजन॥अयुका॥युनका॥ताय॥अरुन
 दाहा॥स्वानत॥असुताजनमर्ते॥ ॥दिदीगन॥अमकस्य॥सर्वयायहं
 नरवजहंरुहं॥ ॥डंसर्वयायहंरुहंविधधनहंरुहं॥डंसर्व
 कमावनल्लुमु
 मनानिहंरुहं॥डंरुहं॥विधधयावननानिहंरुहं॥डंरुहं॥अनधक॥रुहं
 २आवननानिहंरुहं॥डंरुहं॥सन२यसन२आवननानिहंरुहं॥डंरुहं

ॐमन्त्रमन्त्रमन्त्रमन्त्र
 ॐसुसाधर्मधर्म

CMS

5

10

15

20

25

२४ सर्वकस्मात्वननविगुह्य सर्वधर्माविगुह्य सादा ॥ ३३ ॥ उंममाद्यी
 यतिरुत सर्ववत्तनानि विनामनि रुतश्चमकस्य आवननानिहं
 १३ रुद ॥ धानि र्यवा मरु ॥ ॥ उं नले २ महा नले २ नरु सरुवे न
 लकिजन नलेमा ला विगुह्य मधयश्चमकस्य सर्वयायानहं
 रुद ॥ यक र्गन्धि ॥ उं अमरु २ अमरु तारुवे रमित सरुवे ४ रमित विकी
 त गेमिन ४ १ मकस्य सर्वकुमक्य कपीयस्य धाहं ॥ ध ॥ यन्य २ म

२५ रुत दार्द्र्य नाकृग शीषनं नय ॥

हायल्लभ्य अयनि मितायूयल्लभ्य ज्ञानसंतात्रा यविका विनियसा धाहं ॥
 गंधादक ॥ ॥ उं यप्र २ महा यप्र यप्रारुवे ४ अमकस्य सुवावर्त्या गक
 रुस्य धाहं ॥ यथा दक ॥ ॥ यं यहा प्रयजा ॥ धन अस्मि सराव
 ना ॥ येन अस्मि मः दनाय ॥ श्री ॥ अकृम निवृक्षु काद्यन क्रिना सम
 यसत्त्व निमो यवजी कृष्ण दिना ज्ञानसत्त्व मावाहर्न ॥ ॥ धूय नि
 गाजं न यन सनान ॥ ऊम गरी कंसक प्रसत्त्व हितकस्य वृद्धस्य दोष

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

742

नरयाव नोचक ॥ तिलोऊने सोहागिनेका ॥ ॥ मासकनकनक
 य नडदाथयुजायाय ॥ माकाय भाउदुयक सखाचक आगभगत
 सी ॥ ॥ धनशावा योहसी खगिवाकन नृणात्र जाय थक
 नि नमन वेश वं जाय धनचधुमाशोसीतय धनरु नि
 नितन जाय सरुयक ॥ धनयकवक सिहजगसयाय ॥ धनघाडकनस
 यमासजातक अरुपाचासीतयागुनितयाव धन मयान नृणात्रनस

खाचक ॥ मरुथ ॥ ॥ ॐ सखावसखविधधन सर्वज्ञानवासाकदयदं
 खादा ॥ वसखाय ॥ वेशजासी नमनव कसयागखन ॥ ॐ धर्मशादेव
 दिक्कनसखादा ॥ ॥ रुनाभाउदुयक ॥ यकगध ॥ यकवक अम
 नराम ॥ ॥ ॥ धनशावायेंल कंगनखन गखसधनाडा
 यळथासीत्रय थकादियनियक्रमन पिजाममदयानखनवय
 ॥ ॥ यमगजगसरुतयाडितयहन सळकनाव वसदाससखाचिने

श्री जलमं फलजितस्य निस्थितिरुस्यः तमगर्जनं रुचिभुक्तं यमास्थिकं ॥
 ॥ धनतानवाजानकं ॥ धनयते धनधर्मस्यते धनमदनकं ॥ यक्षगर्जनं
 वियः बुद्धिज्ञाय ॥ ॥ अगुनिविय ॥ आरुतः सविय ॥ तात्रवामनद
 तताय ॥ धनवृद्ध ॥ धनगद ॥ भाउसः योर्वीरतयाजी कर्मसुकोणे
 नविस्थितः ॥ ॥ ॥ श्री खलुनः भात्रस्यियः ॥ धनकर्ममनः नमः नमः
 स्वर्गिकाय ॥ ताकदनिनकायकं ॥ धमगु ॥ ॥ ॥ कात्रयः ॥ वधमकर्तः

निष्ठाया ॥ ४० दण्डसर्ववृद्धानां ॥ ४१ धारु कंत मस्तुत ॥ युत्वमा कं यदुनाथमयम
कतयकं कनारुव ॥ ४२ सर्ववृद्धवृजामनिमहा कटं यतिरुखाहा ॥ ४३ वृ
जस्तननां ॥ ४४ मंगनकायकं ॥ ४५ वृजधर्तयत्रीमृत्तिविचैक
॥ ४६ सखवजिभृत् ॥ ४७ सिकं श्री ॥ ४८ नतवजीमृत्तिविचैकनां ॥ ४९ धर्मो
वजिभृत्तिविचैकनां ॥ ५० कर्मवजिभृत्तिविचैकनां ॥ ५१ भावसवायक ॥
हामयागमा ॥ ५२ नक्षमस्तुतवना ॥ ५३ तकोयुजस्तनाग्निमधा ॥ युप्रसथाय
त्रियमानुर्ववृद्ध ॥ ५४ मित्योमहावनि ॥ ५५ कथिताजीममस्तुत ॥ यावृगीवा
महाज ॥ ५६ सखानुयह कानक ॥ ५७ मककं ॥ ५८ कृमादियुया सकृत् ॥ ५९ वृद्ध

15

10

5

0

CMS

5

10

15

20

25



(ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं
 (ॐ) आ४ गुरु ना हं हं
 (ॐ) आ४ तकि ना हं हं
 (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं
 (ॐ) आ४ त्रि व हं हं
 (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं
 (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं
 (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं
 (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं
 (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं

(ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं ॥ (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं
 (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं ॥ (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं
 (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं ॥ (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं
 (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं ॥ (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं
 (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं ॥ (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं
 (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं ॥ (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं
 (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं ॥ (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं



(ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं ॥ (ॐ) आ४ यज्ञक क हं हं

15

10

5

0



ॐ नमः॥ श्री गुरुभ्यो नमः॥ सिद्धिदायि विधिदय कमात्र॥ सिद्धिनिदानां जिम
 तिपात्र तडासत थय नरुमन सिद्धिनिनिमनय न श्रीमि शायदा मुत्र यत्र
 इत्याक विद्यायान दत्रि यातवास ऊमैरुम नाय शायन दारुत्रस्वान
 ॥ ॥ धयत्रय ॥ ॥ कस सग्वन ॥ नायदत्र तडासत मंरुयान्
 यकैरु ॥ धयत्रुम सधु मधुनयायाडा सिद्धिनिजिम निदानां नंदय
 ॥ ॥ धयत्रिधयत्रयधनडाडा ॥ ॥ उवायक शायनमनान गुत्रमधुन समा
 धि धनडाडा धन कसग्वन यथा धनडाडा धयत्रुयजायायक धनैत्रि

सिद्धिदायि विधिदय

CMS

5

10

15

20

25

यिजिमात्राजस्वस्यंदयक गुणरुपाठश्रयाखंडास स्वविद्यायाश्रय गुणम
दत्रदनक वप्रवियक स्वानगत्यक विसरुन धननित्राजडा गात्रना मरुदह
माय मेहनप्रय क साहित्यिक विय थका दिन दिगतायाडा तडासत लडाजाय या
कायकृत्य थन थप्र नसिधप्रकायक प्रवितननित्रक थनसर्थमधुनस
रुसकनरुस अथ वियक यके यदाप्रयुजा नाया यथ वाद उति रुय
डनमासगवय आदित्याय कासय यतस्य आदित्याय ग रु स म नाय अत्रन
सहिताय क कृतन यप्रजाग वधक कसमासमदमाय प्रक वास प्रक वा

[illegible]

१७०

ॐ का सि का थ
ॐ का का स्वयं
ॐ का का कृदृद
ॐ का का न सु
ॐ का का हि

हि
का

३३
का

म थ

न
का

व न
का

वि का ग

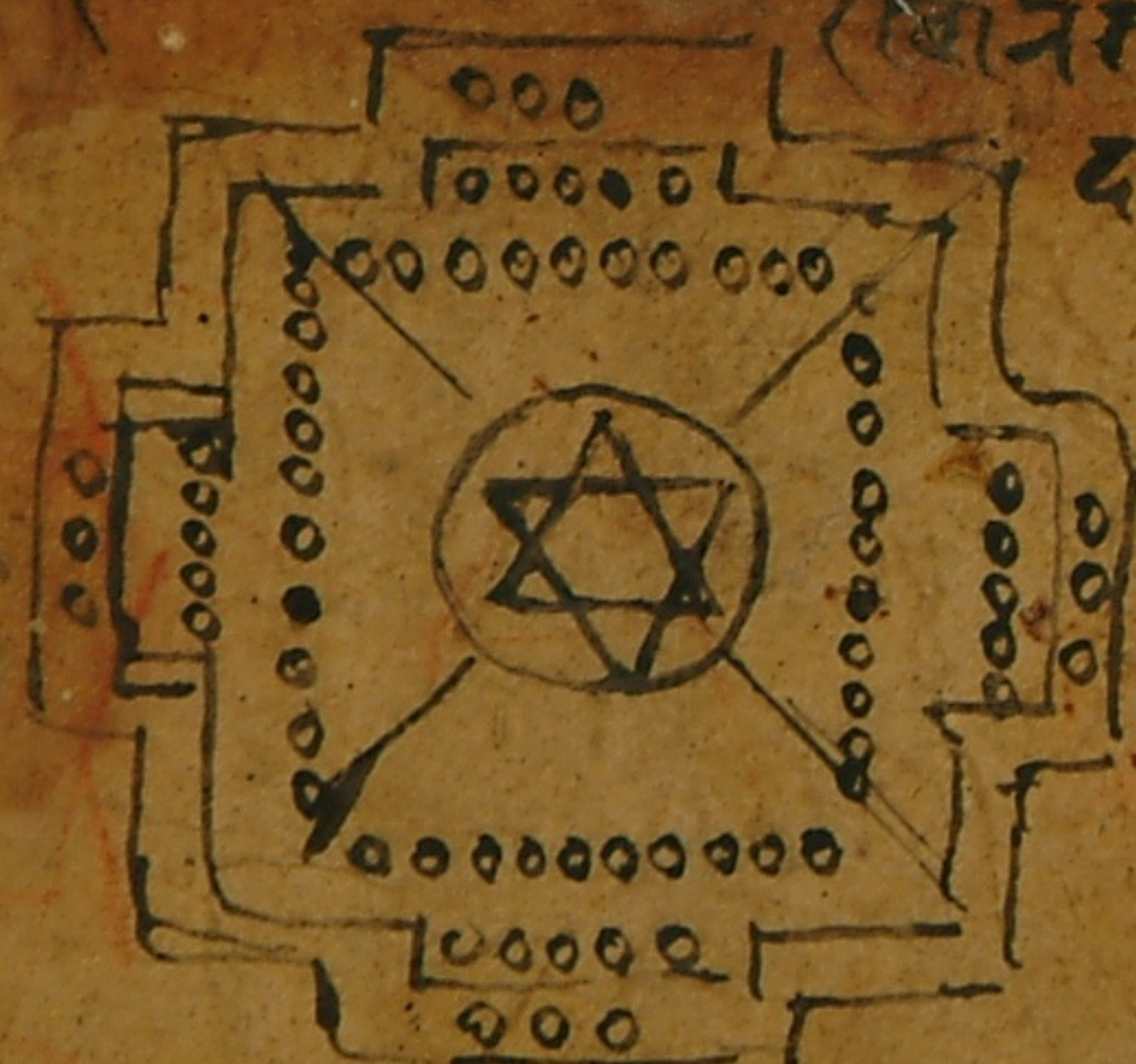
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥
ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ नमः शिवाय ॥

तस्य दहयिष्यं त्रहं हं काज न द स कल र य द न सिद्धि व लुन
 म म्भु र्ने ॥ २ ॥ **व** ३ ध्या म ध्या नं नु म ति र व न ता स क य ता ल ता ल
 कं कं क काज न य ध क ति र ध कि ट त स्य द ह क ति थु न म
 मं क मि धि स क ल र य द न सि धि व लु न म म्भु र्ने ॥ ३ ॥ **उ** ३
 काज न य र्म म ति र म र्म म ति र य मा ना र्म म ता क ३ काल धा नि वृ य
 लि क ध ध म मा नि धी ३ मै व ध म व लु र य ति र व न ता काल य

[illegible]

The image shows a manuscript page with a grid of red ink markings. The markings are arranged in a structured pattern, with some characters appearing to be in a different script or dialect. The text is written in Devanagari script, with some characters appearing to be in a different script or dialect. The page is aged and shows signs of wear, with some ink bleeding and discoloration.

(मु. वलुन. नरु. गव. मू.
 (सम. मू.)



(च) ५ सधितलितयवा यकं १५

(विनयवैकथ्यं बहुविधं विविधं निष्कृतं यत्र सर्वं
दक्षी नाम काय रुकाक्षयं



रा रा लभा नयनस नमो गायित्री

द्योतयतामलका, मदनमूदीत, महारं नदी मरु मरु, अष्टावधुसना
अ, रातगुनुवट् का, साकयोना ४ रुनिहा, रंकात्रकापि ३ अ, यिथिसन
मकया, मानना ४ कृपया ना, योगी, आ, आ ग रुका, अ नयनसहिता
यानभगतयधीव लु४॥ ॥ छंनमयी गुहमाहकार्य, हिमनजगति
कासा, विद्युतिध्र म्ममूडा, गिमूय जनजगकी, जलरुह सपा, हृदगामकूट
अ, सर्वनागपुहकि, गरुगदीवमाता सर्वदा चानिमासि ॥ ॥ गुहयाहि न
न १ सा १

(पूवे लोकाव दुष्कालीयोग अकात्रविर्हं ग क ४ योगा युयाग असिर्नाग
 शैजवः॥ नागकं गत्र रुक्मः मलायप्रानाग योक्तवन्ति नृधिस विरुव
 के यगाका ॥ ॥ प्रविषदा नजाम्यां त्रिविवात्र यजथरु ॥
 धूय शाख्यु कंकम कयु चत यके राध वसुष्मागु खाने
 त्रयस्वी अरुस्वी युगुतिरु धन अमरा त्रया नजामि वजिध

(वायुयवाभुद्रीः जकायकात्रवीर्यं दलिकाठः मिलातस सजात्रक
 वनेः वायुयवाभुमः उडम्वदिकः वायुकि नोमनागो सत्रवधुः
 वलिमिंडलाडो न॥ सफम्या वनेमास्या गानि शुत्रवात्रवायुज
 यरु ॥ ॥ ॥ धय ॥ अगु नत्रमीस कमला वसुष्मागु शिक
 अरुगेध स्त्रीडिहोलस्वी रुगु मसिध माहानि अकमात्र सवय
 सी किमियाथ ॥ ॥ स्त्री काट वडास्वी कजस्वीनड ॥ ॥

(यश्चिमं ह्युदायनिः कंकमवद्वयकालविक्रवन्कुरु वनवधिव
तिः नूनं नववशः तस्मिन्मस्य ॥ अष्टसु वक्रः मः ककटकनागः यश्च
याः चतुदश्याः शु कदिनं वापुः ॥ ॥ दयः वानः कं ई नू
यकमः यावत् ॥ अहं स्वभावं वस्तु कंकमवद्वयः स्त्री यत्र सर्व
वशस्वीः शुगुनिः हाः चूसानाः क्रियः चतुमधिः नाधिमधिः इति ॥ म
ममधः मधियः ॥ ॥

अथ कोमलोत्पत्तिका ॥ अथ काञ्चनविश्वं चक्रिनकं ॥ अथ दृष्टामकवृत्तः ॥ का
धरजवाहसिक्तः ॥ कनकवृत्तः ॥ अथ मलयभाजागधवनः ॥ वलिमृत्तु
मद्यु ॥ हसिक्तम ॥ कादस्यवा ॥ मंगलवा ॥ अथ कनकावृत्तः ॥ ॥
ध्वज ॥ अथ कनकावृत्तः ॥ अथ कनकावृत्तः ॥ अथ कनकावृत्तः ॥ अथ कनकावृत्तः ॥
अथ कनकावृत्तः ॥ अथ कनकावृत्तः ॥ अथ कनकावृत्तः ॥ अथ कनकावृत्तः ॥ अथ कनकावृत्तः ॥
अथ कनकावृत्तः ॥ अथ कनकावृत्तः ॥ अथ कनकावृत्तः ॥ अथ कनकावृत्तः ॥ अथ कनकावृत्तः ॥

उरुजवप्रोद्योनीता। कंकात्रविजः कदलीरुः कोलाशिजि। वरु
 रुजवप्रकः। पृष्ठोशवृकः शरवपाजनाश। वलिमीम दसम्या दित
 योयां सामदि सयुक्तं ॥ ॥ धृय वृगु कसु कय
 वृत्त शरवृगु स्त्री ताय वडास्त्री जिदस्त्री वरुतायु
 गुक्ति जात ककिजा वीवजमधि सिचाकधन शायलमध
 ॥

नेत्रिखेवकुविष्णुमा नकात्रविजः वाकसाधिवति ऊरुकाडम
 उरुजवः कसुः यकठिदृक नीजा नेनरुः। यतासात्रः वरुध
 वादस्याकावध दिन पूजयुक्त ॥ ॥ धृय वृगुय सिद्धास
 कसुनि वृत्त वृत्त वरुम वरु वाद स्त्री मलिस्त्री धर्तस्त्री कस
 माडातिस्त्री उगुक्ति वतामधि मीसी याधया कयरा का सिचाकसि
 धनियथा ॥ ॥

(दफिन, वा ला हि ॥ ज का ३ न का ज वि ३ ॥ य म न का म व क ३ ॥ क मा न र न व ३ ॥ च
 न व ३ ॥ ना ग क लि क ३ नी न ३ व लि ३ क य ना को ॥ य के म्या गु या द म्या गु नु वा
 प्र वा घु ३ ॥ ॥ धू य न कि गि न ज ना मा स च न कं क म ज क च
 द न य न य व स क ह स्त्री सि स्त्री ज स्त्री डि हो क न स्त्री ध न ३ उ
 गु नि य के य ना मा स स न ३ क ३ गु न ना सि क ड वा ध ॥ ॥

ग द म या ॥ धू य क म
 य गु च न या व ३ व स
 मा य स्त्री मा य आ र न नि
 स्त्री वा ह न स्त्री
 उ गु नि हा अ न
 मा वा स न मा स न न म
 धि न इ वा म धि अ डि
 ध ॥ ॥

र न व या ॥ धू य न कि
 च न न गु न स्त्री ला क आ
 रु न नि च न हा क ३ उ
 गु नि अ य ना या न स
 म्या च
 र थ म न ड सा या गि रि सि डि ला क अ व रु न र थ
 धु क न रु ह ट म्या हा ॥

ड धू य वा स च न न
 स गी ध व स ना य
 स्त्री ला य वा ह ३ उ गु
 नि स व रु क न ड म
 ना धि म धि क ड ध
 ॥

वज्रकर्मि मदाका लडा
(चंदनयुक्तं नरु समक्ष
(यत्राशुगवति सा इक्ष
(सकृच्छुक्रादंडा सवृक्ष
(मर्मिग मनिचुदह कोन
(क्षेत्र ग्वकभस्त्र ग्वक
(स्वति लायादंडा मनिना
(दं कतिदंडा सदह निका
(वानगिनि अताश वक्र
(असिदा च्छ दंडा सा
(वेत्य गुहस्वान अम इडम
(गुनया कायधुयति गार्ज
(स्वनि ज्वागस्वान रवन
(रवि नाजदिप मध्वनर
(कासादा ध्वनदा यिदाहा
(धम्मिचैय वावदिआन ना
(हासाया तदस नधति माज
(मयिनंति चर्मा चोतमाह
(भानयता अलिवत् गुनय
(क्रीदं दिदिपूत्वं तंसातु
(दनेदिमा सायातादह
(यस्वति नाजयर्त
(यमधसिदि क्रयस्यादि
(मिक्कशयूत्वं जम्मिन क्रय
(तं नुमहाका इयिमाह
(वाजसिक सोयिता खर्मा
(दिदि सोयिताम सीता
(ताहाधया सतर्कं न गव

वसु इव रथसद्वर्तमान
(युज्जु यकोतग मरु मरु
(कमलाति (क
(रिव (रि
(रुनेवि
(याविनि
(साद

अको जकाथ
जिनव

(तात्वा वासिक नष्टु
(यथिदधानि दगुदो
तत्रम ययत्रिगम ०००
धानिया नयुवात ०००
धिकपाक नयुवात ०००
खया माफा नागनाडा
(नडायतं ०० वाकयिना
(संया ०० गिवाक ००
(जातिग ०० दनेव ००
ना नयन पीडायि
रुनेवसि युनयसि
मं विवाहा कापुव
पि नयु विवाहा उधका
कियुत्व संग न ००
वाहावावहि धिता
इतिवा सा कयवा गने

उत्तर

(वासिक नडा क० कयिना कागज धर्म धनि साज यागा गुण मलका रुत म
(क्रसाव ता वाइवा पीपीया ०० वि चरे सन सयति गोवावसिका सिद्धा बोग
(गद नडा वि कसवा नायाति युनरुदह वरवा व्या कोनक खन सरुमुम
रुयुज सं वयत्रिगम रुदधानि नायिदो दगुदा धानया ०००
(काका वा दो सावादा सवादा याका विष्णु नागनाजाखे याक यिनाय थवा
(नैवाहा देडीनव यिजायि समय जातिगम हितिगम र्गम मूव गुव मं विवाहा
(येनत्वसि कावाहा सुवतुय नाजि संग सन पमावाहा दोकाकाहा कोका नडा य
नद रुक नन धमय मंड नासा गुयि हाकाहा घसदध नगन

15

10

5

0

पाठम करुग जनेध लाहा सुनि वनव ककसनि सिंदागा यकिदह सिकम
 (मसिमहाका ॐ वगु आउखन दडागलाव दासिदा हाजधाति यवावेग मरुगु
 मरुगु यनासगु हाजनि रडावनि कुडा रुसरा सागिय अगिय कविंदय नाग
 यवनरेन सायना वगि नाय वात यवकुमिखि मसिग किंदा सहाविद्य वस
 अरुये हाजरा जामावा नागमर्ज धमथावसि गक अवि नडादा यातिकय
 गमकातकि व्याधतकि रुगि वगु विधाधनि धाजिना कनवि धिमयवाला यिमा
 सनखनि उगइवा वासव दि अजि मजा नवनिगम रिमस धुसा वाहा कनीरुन
 गनरव नावायिनाय सिधग हाके मरु कवाला गवतुवनि रखादा

सिधतानाय
 पकनदि कथयिथि सनथ जनि कोइम दायुमसा गव्याउखन कंगु सीगु
 ककसनि जनाव मसिध थके कोइ जनेधन गिमस कोयना रुवला पूरा
 तडादरुह जन वग सिधिनि गवदावनि सनग यया नडादरु किप धुवाहा
 मसिइयामा नरु नडक धका वनव कककादा वजख मंगर नगरवे माहा
 कोमो कति लासाथाना नयिदडा कयसा वभा जदा काकदा मतिन कअ
 अधादाक रीवला गवहन मडावाहा जग सनमहि वनमात ववा मतिक मसवाहा
 पूरु दिमन कसति पुनायन कवाहा सिधिदडा कागवाहा कावसी दादावरी इगीहि
 माजिया रुनुया विकंगु वजकगि मवाहा दाका कावाहा ताकवाहा पाइ अथकाना

(उद नरु, न नरु, समरु, वासव, वसुधा, मा जयता, वृत्तिना, गुनयु, का दडा, दि
 (कटि, गवत, सा नरु, नडी निग, सनय, महाका, धिमन, वनी, न सात गवति, नदिता, सा वाता
 (नका, किव, मि सध, समरु, कति, गुवा, जमइम, साधादर, यम स्वादिग, ना जयही, मि
 (नमधि, ताद, यमा जी, डानि, व गु, डामा, गुनयाका, इ यायुष, दि, इ यगाहा, दिनि, यम
 (तायाद, मना होष, सदर, वरु, धान, मगधन, जम, इ यष, न नमहाका, ना डदरु
 (गवक नखन, धा सिदा, कदडा, वासव, गुह खनि, इ यी मा, वाडी सिमा, क, महा वृध
 (ना ज खान, जय वगु खानि, रु व न खानि, ना ज दिव, सा यिनाय, क्षी धका, ना हा धका, गुवा
 (मथ नरु, कारुदा, धनदा, यि न वा, धर्म धव,
 (ना हा सा ना, नथि नानि, नद सन खानि, ध वाना,

१ भा। के का जे नि व ता व
 २ पा प उ २२
 ३ पा नि क र्म च रु विं ग नि
 ४ ध र्म प उ २३
 ५ सा नि क र्म स ध पा व
 ६ ध प उ २३
 ७ यो पि व नि प र्जा प उ २४
 ८ व नि वि धि प उ २०
 ९ ना न नि प र्जा प उ २१
 १० न क र्म प उ २२
 ११ यो जा द न या प र्जा प उ २३
 १२ नि व न क वि धि प उ २४
 १३ नि न नि स वि धि प उ २५
 १४ ना न वि य वि धि प उ २६
 १५ सि न न वि धि प उ २७
 १६ न क वि धि प उ २८
 १७ स ना व व न क वि धि प उ २९
 १८ स पा व क वि धि प उ ३०
 १९ वा धा य न क वि धि प उ ३१
 २० नि सान वि धि प उ ३२
 २१ सा नि क वि धि प उ ३३
 २२ ध १०१
 २३ सि क र्म प धि धा वि धि
 २४ १०३

२

१ यानि भवधनविधियः १
 २ पथिवायविधि पउ १०८
 ३ सुउपागनविधियः १०९
 ४ यैश्वर्यकविधि ११०
 पउ ११२०
 ५ मद्रादयगावभा पउ १२१
 ६ सुउतावभा पउ १२२
 ७ भर्जतावभा पउ १२३
 ८ यनायतावभा पउ १२४
 ९ विस्वकर्मविधियः १२५
 १० अस्ति सितविधियः १२६
 ११ अस्ति ययकवाक् १२७
 पउ १३०
 १२ वदं युयविधियः १३१
 १३ सित्यनेयविधियः १३२
 १४ यावकायविधियः १३३
 १५ कयताविधियः १३४
 १६ सुतायकसुनक्रिया १३५

१ पजाविधि ॥ पउ ३
 २ दमकर्मकिनेविधि ॥
 ३ पादिकर्म अर्थविधि ॥
 ४ अस्मकदवगावना
 पउ ३
 ५ दिकि दानं पउ ४
 ६ ज्ञानकर्म पउ १
 ७ नासाकर्म पउ २
 ८ रुतयासध पउ ४
 ९ अर्थयासन पउ ५
 १० उपनयनविधियः १
 ११ अर्थकर्म पउ ११
 १२ साकिकर्म पउ १२
 पउ १४
 १३ साकिक नसतावना
 पउ १५
 १४ नकिनेयतावना पउ १६
 १५ किनेयतावना पउ १७
 २०
 १६ सातावना पउ २१
 १७ योसिक अग्निताव
 भा पउ २१

१२००॥पवड॥
यिववि॥मनच॥
गतिक्कभा॥रुतगीवि॥
माशरुले॥खानासानि॥
मिथि॥भुकम्मान॥
रुतसिखाना॥जिगरुन॥
भुतिलि॥नायय॥गदि॥
दधनडाठ॥समा॥थय॥
यवाकि॥अन॥
समुदरुन॥भनखना॥
खनसनिमशयसाभाबन
सुभ॥जिगनशनसावा
कखुन॥थरुगन॥
असकि॥आयागयाआ
उसाहुसनाकिनागयाग
या॥रुयोमिलु॥यसयाम
नसया॥
१२००॥कमसस॥
१२००॥नवडमस॥
१२००॥जिगरुनयन॥
१२००॥भुकम्मान॥

२
मानदास सुगत दासदा संकलन
भाशा तक् बुधदात उपहार !
मानदास सुगत दासदा संकलन
भाशा तक् बुधदात उपहार !

मलमनीयद्याय॥
पु॥ श्रीवक्तुसूय
द॥ यम
पु॥ श्रीवक्तुसूय
पु॥ कनस
पु॥ वामल
पु॥ मक्तु
पु॥ सतव
पु॥ सुत

